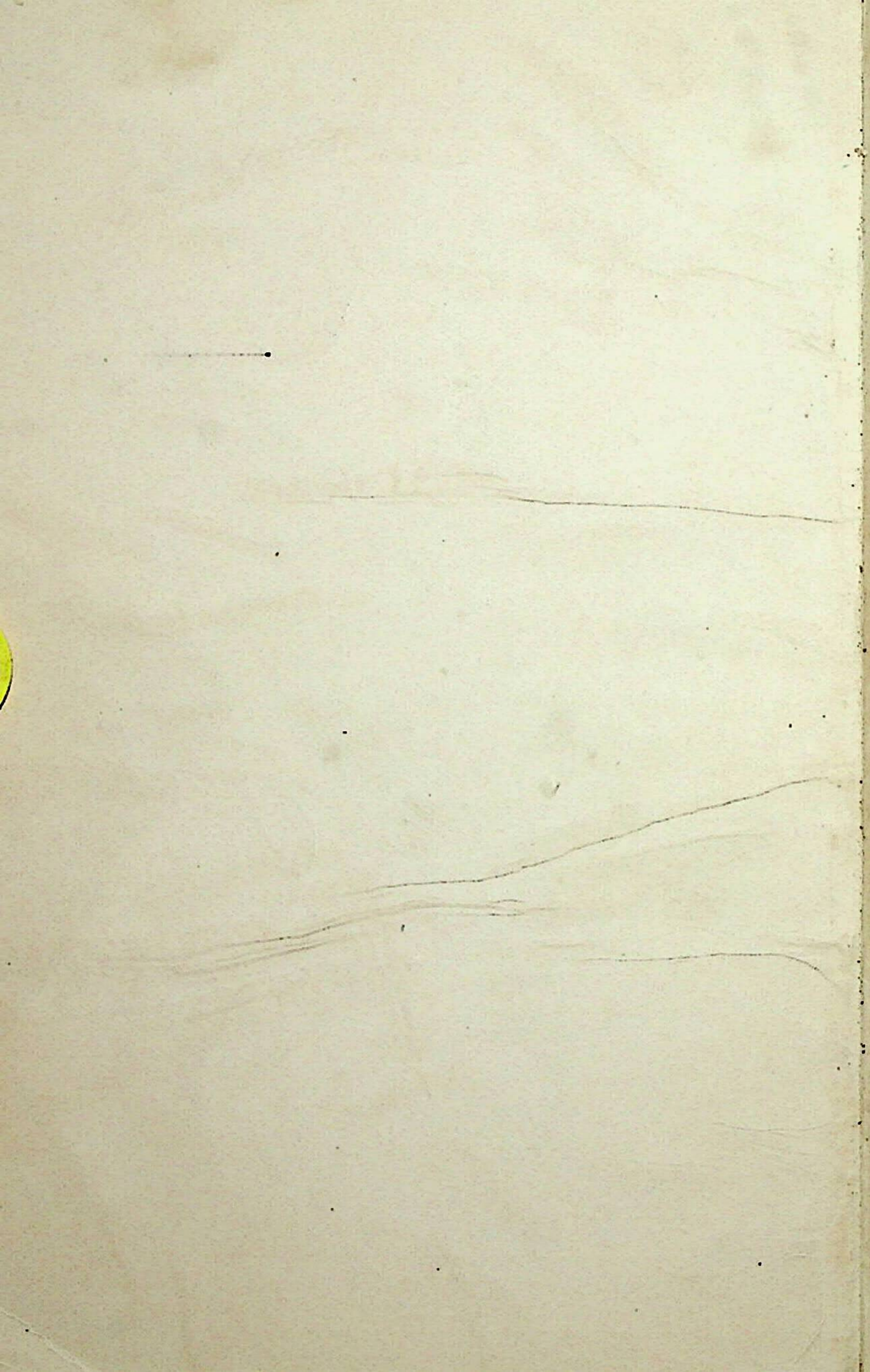
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण तथा दुर्लभ प्रकाशन



वि. सं. २०३५  सन् १९७८ ई.





सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय से प्रकाशित होने वाली ग्रन्थमालाओं, हस्तलिखित ग्रन्थसूची, अनुसंधान-पत्रिका तथा पञ्चाङ्ग का संक्षिप्त परिचय

१. सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला—इस ग्रन्थमाला का प्रकाशन सन् १६१८ में प्रारम्भ हुआ था। अब तक इसमें ११३ ग्रन्थ प्रकाशित एवं मुद्रित हो चुके हैं। इस ग्रन्थमाला में संस्कृत के प्राचीन महत्त्वपूर्ण दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं।

२. सरस्वतीभवन-अध्ययनमाला—इसका भी प्रकाशन सन् १६१८ से ही हो रहा है। इसके प्रारम्भ के १० भागों में अंग्रेजी और संस्कृत में महत्त्वपूर्ण अनुसन्धानात्मक निबन्ध प्रकाशित हुए हैं। इसमें अनुसन्धानात्मक निबन्धों एवं पाण्डित्यपूर्ण नवीन रचनाओं का समावेश किया जाता है। अब तक इसमें १४ ग्रन्थ प्रकाशित एवं मुद्रित हो चुके हैं।

३. गङ्गानाथझा-ग्रन्थमाला—विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद इसका प्रारम्भ किया गया है। इसमें हिन्दी अनुवाद के साथ संस्कृत के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। अब तक इसमें ७ ग्रन्थ प्रकाशित एवं मुद्रित हो चुके हैं।

४. गङ्गानाथझा-प्रवचनमाला—इसमें दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर आमन्त्रित विशिष्ट विद्वानों के द्वारा शास्त्रीय विषयों पर पढ़े गये निबन्धों का समावेश होता है। अब तक इसमें १० ग्रन्थ प्रकाशित एवं मुद्रित हो चुके हैं।

५. सम्पूर्णानन्द-ग्रन्थमाला—इसका आरम्भ विश्वविद्यालय बनने के बाद किया गया है। इसमें संस्कृत-भाषा में आधुनिक विषयों पर लिखे गये ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। अब तक इसमें ६ ग्रन्थ प्रकाशित एवं मुद्रित हैं।

६. गोपीनाथकविराज-ग्रन्थमाला—इसमें संस्कृत के प्रकाशित ग्रन्थों के परिष्कृत संस्करणों के पुनः प्रकाशन की योजना है। इसमें अब तक १ ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है।

७. वल्लभवेदान्त-ग्रन्थमाला—इसमें वल्लभवेदान्त के ग्रन्थों को प्रकाशित करने की योजना है। अब तक इसमें १ ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है जिसमें तीन ग्रन्थ संगृहीत हैं।

८. पालि-ग्रन्थमाला—इसमें पालि-भाषा के विशिष्ट ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। अब तक इसमें अभिधम्मत्थसंगहो के २ भाग, विसुद्धिमग्गो के ३ भाग प्रकाशित

हो चुके हैं। चौथा मुद्रयमाण है। तथा पालित्तिपिटकसद्दानुक्कमणी के २ भागों का मुद्रण पूर्णप्राय है एवं जातकट्ठकथा मुद्रयमाण है।

९. **योगतन्त्र-ग्रन्थमाला**—इसमें विशेषरूप से योगतन्त्र-विभाग द्वारा प्रणीत अथवा सङ्कलित योगतन्त्र-विषयक ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। इसमें अब तक ५ ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। तन्त्रसंग्रह के २ भाग प्रकाशित हो चुके हैं तथा तृतीय भाग मुद्रित हो चुका है।

१०. **लघु-ग्रन्थमाला**—सरस्वती-भवन तथा अन्यत्र उपलब्ध संस्कृत के छोटे-छोटे ग्रन्थों का इसमें प्रकाशन होता है। आरम्भ के १० ग्रन्थ केवल 'सारस्वती-सुषमा' के विभिन्न अङ्कों में ही उपलब्ध हैं। बाद के ग्रन्थों को पृथक् उपलब्ध कराने की भी व्यवस्था विश्वविद्यालय बनने के बाद कर दी गयी है। इसमें अब तक २० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

११. **भोट-चैनिक-ग्रन्थमाला**—इसमें तिब्बती एवं चीनी भाषा में उपलब्ध तथा मूल-संस्कृत में सम्प्रति अनुपलब्ध ग्रन्थों को संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित करने की योजना है।

१२. **म० म० श्रीशिवकुमार शास्त्री-ग्रन्थमाला**—इस ग्रन्थमाला में अब तक मात्र दो ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है।

अधोनिर्दिष्ट पञ्चाङ्ग इस विश्वविद्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं। पञ्चाङ्गों का मूल्य उनके सम्मुखाङ्कित है—

क्रमसं०	विक्रम संवत्	मूल्य रु० पै०
(१)	२०१६ वि०	१·००
(२)	२०१८ वि०	१·१२
(३)	२०२० वि०	१·१३
(४)	२०२२ वि०	१·१३
(५)	२०२३ वि०	१·१३
(६)	२०२४ वि०	१·१३
(७)	२०२६ वि०	१·१३
(८)	२०२७ वि०	१·१३
(९)	२०२९ वि०	१·२५
(१०)	२०३० वि०	१·२५
(११)	२०३१ वि०	१·५०

(१२) २०३२ वि० २·४०

(१३) २०३३ वि० २·५०

वि० संवत् २०१५, २०१६, २०२१, २०२५ तथा २०२८ के पञ्चाङ्ग प्राप्त नहीं हैं। पञ्चाङ्गों की पाँच प्रतियाँ क्रय करने पर मूल्य में २५ प्रतिशत की छूट प्राप्य है।

सरस्वतीभवन पुस्तकालय में संगृहीत ग्रन्थों की सूची तैयार कर दी गई है। वेद, उपनिषद्, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, गीता, स्तोत्र, तन्त्र, सांख्ययोग, मीमांसा, वेदान्त, वैशेषिकशास्त्र, ज्योतिष व्याकरण, जैन भक्ति-सम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्प सङ्गीत, नीति, धनुर्वेद, पञ्जी, प्रशस्ति, चित्र, देशीभाषा आदि विषयों की सूचियाँ प्रकाशित हो चुकीं हैं। अब तक इसमें १२ खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं।

१३. सारस्वती सुषमा—यह संस्कृत-भाषा की त्रैमासिक अनुसन्धानप्रधान पत्रिका है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् १९४२ में हुआ था। इसमें गवेषणात्मक निबन्धों के अतिरिक्त अप्रकाशित लघु-ग्रन्थों का प्रकाशन भी होता है। अब तक इसके २९ खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इसका वार्षिक मूल्य १० रु० तथा प्रत्येक अङ्क का ३ रु० है। इसमें प्रकाशित लेख की २५ प्रतिमुद्रित प्रतियाँ तथा पत्रिका की एक प्रति लेखक को प्रदान की जाती है। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा की पत्रिकाओं के विनिमय में इसे भेजने की व्यवस्था है।

१४. दृक्सिद्धपञ्चाङ्ग—प० बापूदेवशास्त्री द्वारा प्रवर्तित इस पञ्चाङ्ग का प्रचलन सन् १९३३ ई० में हुआ। १९५८ में विश्वविद्यालय की स्थापना होने पर इसका प्रकाशन विश्वविद्यालय के द्वारा प्रारम्भ हुआ, और प्रतिवर्ष नियमित रूप से होता आ रहा है। दृग्गणित के आधार पर निर्मित यह पञ्चाङ्ग आज कल के प्रचलित पञ्चाङ्गों की तुलना में अधिक प्रामाणिक है।

विशेष—सारस्वती सुषमा में प्रकाशित १ अङ्क से २५ वर्षीय अङ्कों तक के लेखों की अनुक्रमणी पृथक् प्रकाशित कर दी गयी है। जो बिना मूल्य के प्रकाशन-विभाग से प्राप्त हो सकती है।





सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय से प्रकाशित

केवल प्राप्त ग्रन्थों की

विषयानुक्रम-सूची

अलङ्कारशास्त्र

१. काव्यप्रकाशः (१–५ उ०, गोकुलनाथी)		
	(स० ग्र० ८६)	८.००
२. काव्यप्रकाशः (दीपिकाटीकायुक्त)		
द्वि० भा०	(स० ग्र० ४६)	१.५०
३. ,, ,, ,, तृ० भा०	,,	१०.००
४. काव्यप्रकाशः (विस्तारिकाटीकायुक्त षष्ठोल्लासपर्यन्त)	(स० ग्र० १०६)	३८.००
५. कोविदानन्दः (ल० ग्र० मा० *१६।३-४)		१.५०
६. रसगङ्गाधरः (रसचद्रिकासहितः)	(स० ग्र०)	(मुद्रित)

उपनिषद्

१. श्रीमद्भगवद्गीता (१–९ अध्याय)	(स० ग्र० ६४)	५.५०

ऋतुविज्ञान

१. प्राच्यभारतीयम् ऋतुविज्ञानम्	(स० ग्र० १९)	१८.००

कला

१. अनुसन्धानपद्धतिः	(सं० ग्र० ८)	३.००
२. गैरिकसूत्राणि	(ल० ग्र० मा० *१२।३-४)	१.००

काव्य

१. नानकचन्द्रोदयमहाकाव्यम्	(स० ग्र० १०५)	(मुद्रित)
२. सूक्तिमुक्तावली	(स० ग्र० ६२)	७.५०

कोश

१. अग्निनिर्वचनम्		१.५०
२. पारसीकप्रकाशः	(स० ग्र० ६५)	५.५०

गणित

१. उकरा-ग्रन्थः	(स० ग्र० १०४)	(मुद्रित)
२. गणितकौमुदी (प्र० भा०)	(स० ग्र० ५७)	१.६२
३. ,, ,,	,,	२.५०
४. चलराशिकलनम् (द्वि० भा०)	(स० ग्र० ८०)	१.७४

ज्यौतिष

१. अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम्	(सं० ग्र० ४)	१३.००
२. ग्रहगणितमीमांसा	(स० अ० १३)	५.५०
३. ज्योतिर्विज्ञानम्	(सं० ग्र० ५)	९.००
४. दृक्सिद्धपञ्चाङ्गनिर्माणपद्धतिः	(सं० ग्र० १)	६.००
५. बृहत्संहिता (भा० १-२)	(स० ग्र० ९७)	
,, (प्र० भा०)	,,	१८.००
,, (द्वि० भा०)	,,	२०.००
६. लोहगोलखण्डनम् } ७. लोहगोलसमर्थनम् }	(ल० ग्र० मा० *१६।३-४)	२.००
८. सिद्धान्तसार्वभौमः		(मुद्रयमाण)
९. सूर्यग्रहणम्	(स० अ० १५)	१२.००
१०. स्कन्दशारीरकम्	(स० ग्र० ९८)	१५.००
११. हयत-ग्रन्थः	(स० ग्र० ९६)	६.००

तन्त्र

१. गोरक्षसंहिता (भा० १)	(स० ग्र० १११)	५०.१०
२. गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः	(स० ग्र० ११०)	१०.५०
३. तन्त्रसंग्रहः (प्र० भा०)	(यो० ग्र० ३)	१६.००
४. ,, (द्वि० भा०)	(यो० ग्र० ४)	१७.००
५. ,, (तृ० भा०)	(यो० ग्र० ६)	(मुद्रित)
६. तारिणीपारिजातः	(स० ग्र० ९०)	४.००
७. त्रिपुरारहस्यम्	(स० ग्र० १५)	९.००
८. नित्याषोडशिकार्णवः	(यो० ग्र० १)	२५.००
९. महार्थमञ्जरी	(यो० ग्र० ५)	१७.००
१०. योगिनीहृदयम्	(स० ग्र० ७)	१०.००
११. लुप्तागमसंग्रहः	(यो० ग्र० २)	१२.००

दर्शन

१. अद्वैतवेदान्तबिन्दुः	(ग० प्र० ४)	२.००
२. न्यायदर्शनबिन्दुः	(ग० प्र० ५)	२.००
३. बौद्धदर्शनबिन्दुः	(ग० प्र० २)	१.००
४. राजनीतिदर्शनबिन्दुः	(ग० प्र० १०)	३.५०
५. रामायणमहाभारतराजनीतिबिन्दुः	(ग० प्र० ७)	१.००
६. वेदविज्ञानबिन्दुः	(ग० प्र० १)	१.००
७. वेदान्तदर्शनबिन्दुः	(ग० प्र० ६)	२.७५
८. व्याकरणदर्शनबिन्दुः	(ग० प्र० ८)	३.७५
९. शैवदर्शनबिन्दुः (परिवर्धित संस्करण)	(ग० प्र० ३)	९.००
१०. शैवदर्शनसंग्रहः	(ग० प्र० ६)	२.००

धर्मशास्त्र

१. द्वैतपरिशिष्टम् (धर्मशास्त्रीयमैथिलनिबन्धरूपम्)	(स० ग्र० ९९)	८.००
२. धर्मशास्त्रीयव्यवस्थापत्रसंग्रहः	(स० ग्र० ८५)	१०.००
३. धर्मानुबन्धिश्लोकचतुर्दशी	(स० ग्र० २२)	१.००
४. बोधायनशुल्बसूत्रम्	(स० ग्र० १०७)	(मुद्रित)
५. श्राद्धकल्पः	(स० ग्र० १८)	१९.००
६. संस्कारदीपकः	(गो० प्र० १)	७.००

न्यायशास्त्र

१. तत्त्वचिन्तामणिः (मङ्गलवादान्तः)	(शि० शा० ग्र० २)	१५.००
२. न च रत्नमालिका	(स० ग्र० ९३)	६.५०
३. न्यायकुसुमाञ्जलिः	(ग० ग्र० ६)	५६.५०
४. न्यायकौस्तुभः (द्वि० भा०) अनुमानखण्ड		(मुद्र्यमाण)
	(स० ग्र० ३३)	१०.००
५. पद्वाक्यरत्नाकरः	(स० ग्र० ८८)	१५.००

पालि

१. अभिधम्मत्थसंगहो प्र० भा०	(पा० ग्र० १)	१५.००
,, द्वि० भा०	(,,)	२०.००

२. जातकट्ठकथा (मुद्रयमाण)
३. पालित्रिपिटकसद्दानुक्कमणिका (प्र० भा०) (मुद्रित)
,, (द्वि० भा०) (मुद्रित)
४. विशुद्धिमग्गो (प्र० भा०) (पा० ग्र० ३) ३६.००
,, (द्वि० भा०) (,,) ३२.००
,, (तृ० भा०) (,,) २७.००

प्राकृत

१. प्राकृतप्रकाशः (स० ग्र० १०२) ३७.७५

पुराणेतिहास

१. कल्किपुराणम् (स० ग्र० १०३) १८.००
२. गर्गसंहिता (प्र० भा०) (स० ग्र० ८६) १०.००
३. बौद्धसाधना का विकास १.७५
४. भारतस्य सांस्कृतिको दिग्विजयः (स० ग्र० ७) १०.००
५. विष्णुधर्मोत्तरपुराणम् (ग० ग्र० ४) ७.२५
(चित्रसूत्रम्)

बौद्धदर्शन

१. विंशतिकाविज्ञप्तिमात्रतासिद्धिद्वयम् (ग० ग्र० ५) ३६.२५

भक्तिशास्त्र

१. भक्तिचन्द्रिका (स० ग्र० ६) १०.००
२. भक्तिरत्नावली (ग० ग्र० ३) १५.००

मनोविज्ञान

१. अभिनवमनोविज्ञानम् (सं० ग्र० ६) ६.००
२. अर्वाचीनं मनोविज्ञानम् (सं० ग्र० ३) १२.००

मीमांसा

१. तन्त्ररत्नम् (तृ० भा०) (स० ग्र० ३१) ५.५०
२. ,, (च० भा०) (,,) १३.००
३. ,, (पं० भा०) (मुद्रयमाण)

४. तौतातिकमततिलकम् (तृ० भा०)	(स० ग्र० ७६)	२.७५
५. न्यायकौस्तुभः (प्र० भा०)	(स० ग्र० ३३)	१०.००
६. ,, (द्वि० भा०)	(स० ग्र० ३३)	(मुद्रयमाण)

राजशास्त्र

१. पाश्चात्त्यं नीतिशास्त्रम्	(सं० ग्र० २)	४.००
२. भारतीयविचारदर्शनम् (प्र० भा०)	(सं० ग्र० ६)	४०.००

वेद

१. शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता सायणभाष्ययुता)		(मुद्रित)
२. अथर्ववेदे शान्तिपुष्टिकर्माणि	(स० अ० १७)	८.००
३. आश्वलायनश्रौतसूत्रम (द्वि० भा०)	(स० ग्र० ७४)	४.००

वेदान्त

१. अद्वैतविद्यातिलकम्	(स० ग्र० ३४)	१.२५
२. उपेन्द्रविज्ञानसूत्रम्	(स० ग्र० ७३)	१.००
३. न्यायसिद्धाञ्जनम्	(ग० ग्र० २)	२५.००
४. शुद्धाद्वैतमार्तण्डः	(व० ग्र० १)	५.००

व्याकरण

१. पाणिनीयधातुपाठसमीक्षा	(स० अ० १४)	१८.५०
२. पाणिनीयप्रबोधः	(स० ग्र० १०१)	४.५०
३. पाणिनीयव्याकरणे प्रमाणसमीक्षा	(स० अ० २०)	२६.२५
४. प्रक्रियाकौमुदी (प्र० भा०)	(स० ग्र० १११)	५०.००
५. प्रक्रियाकौमुदीविमर्शः	(स० अ० १६)	८.००
६ बृहच्छब्देन्दुशेखरः (१-३ भाग)	(स० ग्र० ८७)	४५.००
७. वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्-पुनर्मुद्रण)	(स० ग्र० ९१)	२६.५०
८. वाक्यपदीयम (द्वि० का०)	(स० ग्र० ९१)	२८.००
९. वाक्यपदीयम् (तृ० का० प्र० भाग)	(स० ग्र० ९१)	२५.००
१०. वाक्यपदीयम् (तृ० का०, द्वितीय भाग)	(स० ग्र० ९१)	(मुद्रयमाण)
११. ,, (तृ० का०, तृतीय भाग)	(स० ग्र० ९१)	(मुद्रयमाण)

१२. लघुकाशिका	(पूर्वार्धं)	(स० ग्र० १००)	१६.२५
,,	(उत्तरार्धं)	(,, ,,)	१६.००
१३. व्याकरणदर्शनपीठिका		(स० अ० १२)	४.००
१४. व्याकरणदर्शनप्रतिमा			(मुद्र्यमाण)
१५. व्याकरणदर्शनभूमिका		(स० अ० ११)	५.००
१६. परिभाषेन्दुशेखरः (हैमवतीटीका)		(शि० कु० शा० ग्र० १)	४६.००

स्तोत्र

१. देवीपुष्पाञ्जलिः	(ल० ग्र० मा० *१२।२)	१.००

सङ्गीत

१. जैमिनीयसामगानम्	(स० ग्र० १०८)	४५.५०

सरस्वतीभवन अध्ययनमाला में प्रकाशित आङ्गलभाषामय निबन्धों की सूची

(१)	आङ्गलभाषामय नानानिबन्धों का संग्रह		[अ० मा० १]	५.००
(२)	,,	,,	[अ० मा० २]	५.००
(३)	,,	,,	[अ० मा० ३]	५.००
(४)	,,	,,	[अ० मा० ४]	५.००
(५)	,,	,,	[अ० मा० ५]	५.००
(६)	,,	,,	[अ० मा० ६]	५.००
(७)	,,	,,	[अ० मा० ७]	५.००
(८)	,,	,,	[अ० मा० ८]	५.००
(९)	,,	,,	[अ० मा० ९]	५.००
(१०)	,,	,,	[अ० मा० १०]	५.००

* सारस्वती सुषमा के चिह्नांकित अंकों में प्राप्त।

प्रकाशित

हस्तलिखितग्रन्थों की विवरणात्मिका सूची

(Manuscript-Catalogues)

(१)	प्रथमखण्ड	प्रथमभाग	(वेद)	३.२५
(२)	प्रथमखण्ड	द्वितीयभाग	(उपनिषद्)	२.०६
(३)	द्वितीयखण्ड	प्रथमभाग	(कर्मकाण्ड)	२.५०
(४)	द्वितीयखण्ड	द्वितीयभाग	(कर्मकाण्ड)	२.००
(५)	तृतीयखण्ड		(धर्मशास्त्र)	४.३१
(६)	चतुर्थखण्ड		(पुराणेतिहास और गीता)	६.२५
(७)	पञ्चमखण्ड	प्रथमभाग	(स्तोत्र)	७.२५
(८)	पञ्चमखण्ड	द्वितीयभाग	(स्तोत्र)	७.२५
(९)	षष्ठखण्ड		(तन्त्र)	६.००
(१०)	सप्तमखण्ड		(पूर्वोत्तरमीमांसा और सांख्ययोग)	७.००
(११)	अष्टमखण्ड		(न्यायवैशेषिक)	८.५०
(१२)	नवमखण्ड		(ज्योतिष)	७.५०
(१३)	दशमखण्ड		(व्याकरण)	६.००
(१४)	एकादशखण्ड		(साहित्य)	८.५०
(१५)	द्वादशखण्ड		(जैनभक्ति-सम्प्रदाय-आयुर्वेद-कामशास्त्र-शिल्पकला-संगीत-नीति-धनुर्वेद-पञ्जी-प्रशस्ति-चित्र-देशीभाषासंग्रहात्मक)	८.००

—:*:—

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयसे
प्रकाशित ग्रन्थों की

विस्तृत-विवरणात्मिका-सूची

(१)

सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला

१. *किरणावलीभास्करः (वैशेषिक) श्रीमदुदयनाचार्य द्वारा विरचित,
सम्पादक—म० म० प० गोपीनाथ कविराज
आकार

२. *अद्वैतचिन्तामणिः (वेदान्त) रङ्गोजीभट्टरचित
आकार डिमाई पृ० ८०
इस ग्रन्थ में अद्वैतवेदान्त के सिद्धान्तों का कारिकाओं तथा वृत्ति के माध्यम से स्पष्ट विवेचन है। वेदान्त के प्रमेयांश के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। अन्त में ग्रन्थ का विवरण है। सम्पादन, भूमिका तथा विषय सूची से युक्त है।

३. *वेदान्तकल्पलतिका (अद्वैत वेदान्त) श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित
सम्पादक एवं भूमिका—संशोधक प० रामाज्ञा पाण्डेय—
आकार पृष्ठ

४. *कुसुमाञ्जलिबोधिनी (न्याय) श्रीवरदराजविरचित—श्री-उदयनाचार्यकृत कुसुमाञ्जलि टीका।
सम्पादक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज
आकार

५. *रससारः (न्याय) भट्टवादीन्द्र रचित।
आकार डिमाई पृ० ११६।
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज।
यह किरणावली के गुणप्रकरण की टीका है। ग्रन्थ बुद्धिनिरूपण तक ही है। भाषा प्राञ्जल होने से विषय की गम्भीरता कष्टप्रद नहीं है। इसका रचना काल १३ वीं का मध्य अथवा १४ वीं शती का आरम्भ आंका जा सकता है। श्री गोपीनाथ कविराज की अंग्रेजी भूमिका में विशद विचार हुआ है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*६. भावनाविवेक (मीमांसा) भाग १–२, श्रीमण्डनमिश्रविरचित, भट्टोम्वेककृतटीकासहित। सम्पादक—म० म० डॉ० गंगानाथझा
आकार डिमाई पृष्ठ ७० भाग १
आकार डिमाई पृष्ठ ६४ भाग २

७. योगिनीहृदयम् (तन्त्र) अमृतानन्दयोगीकृतदीपिका, भास्करराय-कृत सेतुवन्धकयुक्त म० म० पं० गोपीनाथकविराज द्वारा सम्पादित।
आकार डिमाई पृ० ४४८
यह नामकेश्वरतन्त्र का मुख्य ग्रन्थ है। नित्याषोडशिकार्णव से इसकी समानता है। तन्त्रशास्त्र का यह प्रामाणिक ग्रन्थ है।

*८. काव्यडाकिनी (साहित्य) गङ्गानन्दकवीन्द्ररचित।
आकार डिमाई पृ० ६०
सम्पादक—होशिंगजगन्नाथशास्त्री शर्मा।
इसमें ५ प्रकरणों में काव्यदोषों का विवेचन किया गया है। ग्रन्थ-कार ने उदाहरण तथा उन पर विवेचन नये ढंग से किया है। प्राचीन ग्रन्थों में जो भी उदाहरण दिये गये हैं, उनका इसमें उल्लेख नहीं है, नवीन उदाहरण ही दिये गये हैं। इसकी रचना बीकानेर के महाराज कर्णसिंह के सभापण्डित ने की है। वे मैथिल विद्वान् थे। १७४८ संवत् में लिखी हुई इस पुस्तक की पाण्डुलिपि सरस्वती-भवन पुस्तकालय में उपलब्ध है।

९. भक्तिचन्द्रिका (भक्तिशास्त्र) नारायणतीर्थकृत। बलदेबोपाध्याय-द्वारा सम्पादित।
आकार डिमाई (१९६७ ई०) पृष्ठ ४१९ १०-००
यह शाण्डिल्य-भक्तिसूत्रों की उत्तम व्याख्या है। इसमें सूत्र भी मूलरूप में मुद्रित हैं। अत्यन्त आकर्षक संस्करण है।

*१०. सिद्धान्तरत्नम् (गौडीयवैष्णवदर्शन) बलदेवविद्याभूषणविरचित।
आकार डिमाई प्रथम भाग पृ० १४८
प्रस्तावनालेखक एवं सम्पादक—म० म० पं० श्रीगोपीनाथकविराज।
आकार डिमाई, द्वि० भाग पृ० २३८
इस ग्रन्थ में वेदान्त के सभी मतों के निराकरण के साथ भगवान् के स्वरूप का निर्णय ८ पादों में किया गया है। विशेषरूप से विष्णु का

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

सर्ववेद्यत्व सिद्ध करते हुए केवलाद्वैत मत का निराकरण किया गया है। यह अपने सिद्धान्त का प्रतिपादक ग्रन्थ है।

*११. श्रीविद्यारत्नसूत्रम् (तन्त्र) श्रीगौडपादविरचित, शङ्करारण्यकृत टीकासहित। सम्पादक—पं० नारायणशास्त्रीखिस्ते
आकार डिमाई पृष्ठ ५०

*१२. रसप्रदीपः (साहित्य) प्रभाकरभट्टविरचित।
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—नारायणशास्त्रीखिस्ते।
आकार डिमाई पृष्ठ ७४
पण्डितराज जगन्नाथ से पूर्व तथा प्रदीपकार के पश्चात् प्रकृत ग्रन्थकार ने रस के सम्बन्ध में सुन्दर निबन्ध रचा है। इसमें काव्य के लक्षण तथा रस के स्वरूप के विषय में भट्टमम्मट के पक्ष में विचार किया है। काव्य का लक्षण समस्त विचारकों की दृष्टि से देख कर अपना सिद्धान्तपक्ष प्रदर्शित किया है। ग्रन्थ की विचार-परम्परा दार्शनिकपद्धति की है। प्रत्येक साहित्यिक के लिये ग्रन्थ अवश्य सङ्ग्रहणीय है। इसके अध्ययन से रसगङ्गाधर के अध्ययन में बल प्राप्त होगा।

*१३. सिद्धसिद्धान्तसंग्रहः (नाथमार्ग) श्रीबलभद्रविरचित।
सम्पादक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज।
आकार डिमाई पृष्ठ ५२

*१४. त्रिवेणिका (साहित्य) आशाधरभट्टकृत।
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—प्रो० बटुकनाथशास्त्री एम० ए०, श्रीहोशिङ्गजगन्नाथशास्त्री साहित्योपाध्याय।
आकार डिमाई पृष्ठ ३०
कोविदानन्द के कर्ता आशाधरभट्ट ने इस ग्रन्थ में शक्ति, लक्षणा और व्यञ्जना वृत्तियों का विवेचन किया है। यह ग्रन्थ कोविदानन्द के बाद की रचना है तथा अनेक स्थानों पर कोविदानन्द का अविकल उद्धरण दिया है। ग्रन्थकार ने साहित्यदर्पण का उल्लेख किया है। अपने विषय में ग्रन्थकार ने नवीन दृष्टिकोण से विचार किया है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*१५. त्रिपुरारहस्यम् (ज्ञान) श्रीनिवासभट्टविरचिततात्पर्यदीपिकासहित।
म० म० श्रीगोपीनाथकविराजद्वारा सम्पादित।
आकार डिमाई पृष्ठ ५४८, कपड़े की जिल्द (१६६५ ई०)। ६-००
सिद्धान्त की दृष्टि से प्रत्यभिज्ञादर्शन की भाँति भाषा तथा इसमें योगवासिष्ठ जैसी उत्कृष्टता है। सापेक्षता-सिद्धान्त, जिसे आईन्स्टाइन महोदय की कल्पना कहा जाता है, इसके १२-१३ अध्यायों में वर्णित है।

*१६. काव्यविलासः (साहित्य) चिरञ्जीवी विरचित।
आकार डिमाई पृष्ठ ५६
भूमिकालेखक, सम्पादक—प्रो० बटुकनाथशास्त्री एम० ए०, साहित्योपाध्याय होशिङ्गजगन्नाथशास्त्री।
इस ग्रन्थ में काव्यलक्षण, उसके कारण, रस और अलङ्कारों का दो प्रकरणों में विवेचन है। यद्यपि ग्रन्थकार ने काव्यप्रकाशकार के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थकार का नाम नहीं लिया, तथापि पण्डितराज जगन्नाथ की तरह काव्य का कारण प्रतिभा को माना है। ऐसे ग्रन्थों के अवलोकन से प्रज्ञा में विवेक की क्षमता बढ़ेगी।

*१७. न्यायकलिका (न्याय) जयन्तभट्टरचित।
आकार डिमाई पृष्ठ २७
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—प० गंगानाथझा।
इसमें गौतम के प्रथम सूत्र की व्याख्या की गई है, जिससे न्यायदर्शन के सिद्धान्त का पुष्ट ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे वैशेषिक-दर्शन के ज्ञान के लिये तर्कसंग्रह प्रामाणिक ग्रन्थ है, वैसे ही गौतमदर्शन के ज्ञान लिये यह अत्यन्त उपादेय तथा प्रामाणिक ग्रन्थ है।

*१८. गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः (नाथमार्ग)।
सम्पादक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज।
आकार डिमाई पृष्ठ ८६

*१९. प्राकृतप्रकाशः (प्राकृतव्याकरण) वररुचिविरचित। वसन्तराजकृत सञ्जीवनी, सदानन्दकृत-सुबोधिनी टीकासहित।
सम्पादक—प्रो० बटुकनाथ एम० ए० तथा श्रीबलदेव उपाध्याय।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

प्रथम भाग आकार डिमाई पृष्ठ १६०

द्वितीय भाग ,, ,, २३४

*२०. मांसतत्त्वविवेकः (धर्मशास्त्र) विश्वनाथभट्टाचार्यविरचित ।

आकार डिमाई पृष्ठ ४८

प्राक्कथनलेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।

सम्पादक—साहित्योपाध्याय होशिंगजगन्नाथशास्त्री ।

इस ग्रन्थ में किन स्थितियों तथा किन लोगों को किन-किन जीवों का मांस खाना चाहिये अथवा नहीं - इसका विशद विवेचन है। यह ग्रन्थ बौद्धों के उत्तर रूप में विद्वान् ग्रन्थकारद्वारा लिखा गया है। न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीकार ही इस ग्रन्थ के कर्ता हैं।

*२१. न्यायसिद्धान्तमाला (न्याय) जयरामन्यायपञ्चाननभट्टाचार्यरचित ।

आकार डिमाई पृष्ठ १७६

सम्पादक एवं भूमिकालेखक—डॉ० मंगलदेवशास्त्री एम० ए०, डी० फिल ।

न्यायसिद्धान्तमाला (न्याय) द्वि० भा०, श्रीजयरामन्यायपञ्चानन-भट्टाचार्यरचित ।

आकार डिमाई पेज २६ + १०६ + ६

इसमें सिद्धान्त प्रतिपादक गौतम सूत्रों की संक्षिप्त तथा उत्तम व्याख्या की गई है। अन्त में पदार्थ, गुण, द्रव्य, सम्बन्ध, आत्मा आदि के विषय में विभिन्न भारतीय दार्शनिकों के मत का संक्षिप्त निष्कर्ष प्रतिपादित है। ग्रन्थकार अपने समय के प्रख्यात विद्वान् हैं।

*२२. धर्मानुबन्धिश्लोकचतुर्दशी (धर्मशास्त्र) शेषकृष्णरचित, शेषरामरचित टीकायुक्त ।

भूमिकालेखक एवं सम्पादक—नारायणशास्त्री खिस्ते ।

आकार डिमाई पृष्ठ ६२

श्राद्ध में पिण्डदान, तर्पण आदि के सम्बन्ध में १४ श्लोकों की रचना की गई है। इस लघुनिबन्ध में श्राद्धसम्बन्धी आचार का प्रामाणिक निर्णय है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*२३. नवरात्रप्रदीपः. (धर्मशास्त्र) नन्दपण्डितापरनामा विनायकधर्माधिकारीकृत ।

आकार डिमाई पृष्ठ ११५

प्राक्कथन-लेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।

सम्पादक—प० वरकरे शास्त्री एवं बैजनाथ शास्त्री ।

नवरात्रव्रत तथा देवीपूजा की प्रक्रिया का इसमें प्रामाणिक वर्णन है ।

*२४. रामतापनीयोपनिषद् (उपनिषद्) आनन्दवनकृतव्याख्यासहित ।

प्राक्कथनलेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज, सम्पादक अनन्तशास्त्रिवेताल ।

आकार डिमाई पृष्ठ २८६

इसमें भगवान् राम को परब्रह्म कहा गया है और उनकी आराधना के प्रकार वर्णित हैं । अन्त में पूजन और धारण के यन्त्रचित्र संलग्न हैं । ग्रन्थ का सम्पादन पाठान्तरों तथा वर्णानुक्रमसूचियों से युक्त है ।

*२५. सापिण्डकल्पलतिका (धर्मशास्त्र) आपदेवापरनामा सदाशिवदेवरचित, नारायणदेवकृत वृत्तिसहित ।

भूमिका लेखक एवं सम्पादक—श्रीहोशिङ्गजगन्नाथशास्त्री ।

आकार डिमाई पृष्ठ ८८

विवाह तथा अशौच में सापिण्ड्य का विचार किया जाता है । इसका ठीक ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक कुलीन व्यक्ति के लिये आवश्यक है । ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ में उनका संक्षिप्त तथा स्पष्ट विवेचन किया है । वृत्तिकार ने उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया है । पचीस श्लोकों में ग्रन्थ पूर्ण है । अन्त में विषयसूची, प्रमाणभूत ग्रन्थों की नामानुक्रमसूची भी दी है ।

*२६. मृगाङ्करेखा (नाटिका) विश्वनाथदेवरचित ।

आकार डिमाई पृष्ठ ८०

सम्पादक एवं भूमिकालेखक—साहित्याचार्य खिस्ते नारायणशास्त्री ।

इसमें कलिङ्गाधिप कर्पूरतिलक कामरूपेश्वर की कन्या विलासवती के प्रेम-विवाह की कथा है । रत्नावली, मालविकाग्निमित्र आदि नाटकों के आधार पर इसका संविधानक तैयार किया गया है । इसमें ४ अङ्क हैं ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त है ।

*२७. विद्वच्चरितपञ्चकम् (काव्य) नारायणशास्त्री खिस्ते द्वारा रचित।
आकार डिमाई पृष्ठ १५४
भूमिका लेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज।
विक्रम की १८वीं शती के अन्त तथा १९वीं शती के मध्य में भारत-प्रसिद्ध पांच विद्वानों का चरित चक्रपद्धति में लिखा गया है। प्रायः सभी गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज, वाराणसी के अध्यापक हैं। आज इनकी ही शिष्यपरम्परा व्याकरण, न्याय और साहित्यशास्त्र में चल रही है। इनके नाम निम्नलिखित हैं—
१. गङ्गाधरशास्त्री मानवल्ली, २. कैलाशचन्द्रशिरोमणि,
३. दामोदरशास्त्री भारद्वाज, ४. शिवकुमारशास्त्री,
५. तात्याशास्त्री पटवर्धन।

*२८. व्रतकोशः (धर्मशास्त्र) जगन्नाथशास्त्रीहोशिगकृत।
प्राक्कथनलेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज।
आकार डिमाई पृष्ठ ४०४
दाक्षिणात्य तथा औत्तराहों के प्रामाणिक निबन्धों के आधार पर इसकी रचना की गई है। आधारग्रन्थों का नाम तथा संकेत भी दिया गया है। इसके आधार पर व्रतों के सम्बन्ध में जानकारी निर्दिष्ट ग्रन्थ में उपलब्ध होगी। इस प्रकार का कोश धर्मशास्त्र, पुराण और तन्त्र ग्रन्थों के बनाने के उद्देश्य से यहाँ प्रथम भाग उल्लिखित है। किन्तु यह कोश अपने में पूर्ण है।

*२९. वृत्तिदीपिका (व्याकरण) मौनी श्रीकृष्णभट्टरचित।
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—गङ्गाधरशास्त्री।
आकार डिमाई पृष्ठ ९२
ग्रन्थकार नागेशभट्ट से अर्वाचीन हैं। इसमें वैयाकरणों क मत को सिद्धान्त पक्ष कहा गया है। ग्रन्थकार ने लक्षणा नहीं मानी है तथा व्यञ्जना का समर्थन किया है। ग्रन्थ में कुल १० प्रकरण हैं—शक्ति, लक्षणा, व्यञ्जना, धात्वर्थ, तिङर्थ, सनाद्यर्थ समासशक्ति, स्त्रीप्रत्ययार्थ, तद्धितार्थ, स्फोट। इसमें बोपदेव तक के मत पर विचार किया गया है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*३०. पदार्थमण्डनम् (न्याय) वेणीदत्त विरचित ।
आकार डिमाई पृष्ठ ३७
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—गोपालशास्त्रीनेने

रघुनाथ शिरोमणि रचित 'पदार्थतत्त्वनिरूपणम्' ग्रन्थ के खण्डन में इसकी रचना है। ग्रन्थकार ने ५ पदार्थ, ६ द्रव्य, २१ गुण, १ कर्म, अभाव २ धर्म ६ मानें हैं। चित्ररूप के सदृश चित्रगन्ध चित्ररस का भी समर्थन किया है। संक्षेपतः रघुनाथ शिरोमणि के स्वीकृत पदार्थों में से कुछ का समर्थन तथा कुछ का खण्डन किया है।

३१. तन्त्ररत्नम् १–५ भागः मीमांसा) पार्थसारथिमिश्रविरचित ।
टी० रामचन्द्र दीक्षित सम्पादितम् ।

*आकार डिमाई, प्रथमभाग	पृष्ठ १५४		
* ,, ,, द्वितीयभाग	पृष्ठ १६४		
,, ,, तृतीयभाग (१९६३)	पृष्ठ ३६२	कपड़े की जिल्द	५.५०
,, ,, चतुर्थभाग (१९७२)	पृष्ठ ६५४	,,	१३.००
,, ,, पञ्चमभाग			(मुद्र्यमाण)

इसमें मीमांसा सूत्रों पर पार्थसारथि मिश्र की व्याख्या है। मीमांसा के एक प्रस्थान का यह प्रमुख ग्रन्थ है।

*३२. तत्त्वसार (न्याय) राखालदासरचित ।
आकार डिमाई पृष्ठ ६०
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—हरिहरशास्त्री ।

विक्रम की २९वीं शती के प्रारम्भ में बंगाल के महान् नैयायिका के रूप में प्रसिद्ध थे। प्रकृत ग्रन्थ में प्रायः १८ शंकाओं का समाधान है। इस पर अमर्ष व्यक्त करते हुए किसी ने तत्त्वसारविचार की रचना की। जिसका खण्डन सम्पादक ने यथास्थान किया है। ग्रन्थ नैयायिकों के लिये अत्यन्त संग्राह्य है।

३३. न्यायकौस्तुभः (न्याय) [प्रत्यक्षखण्ड] लेखक—महादेवपुणतामकर ।

❀

[प्रथमभाग]

आकार डिमाई पृष्ठ १५६
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—डॉ० उमेशमिश्र ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

—

*२७. विद्वच्चरितपञ्चकम् (काव्य) नारायणशास्त्री खिस्ते द्वारा रचित ।
आकार डिमाई पृष्ठ १५४
भूमिका लेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।
विक्रम की १८वीं शती के अन्त तथा १९वीं शती के मध्य में भारत-प्रसिद्ध पांच विद्वानों का चरित चक्रपद्धति में लिखा गया है। प्रायः सभी गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज, वाराणसी के अध्यापक हैं। आज इनकी ही शिष्यपरम्परा व्याकरण, न्याय और साहित्यशास्त्र में चल रही है। इनके नाम निम्नलिखित हैं—
१. गङ्गाधरशास्त्री मानवल्ली, २. कैलाशचन्द्रशिरोमणि,
३. दामोदरशास्त्री भारद्वाज, ४. शिवकुमारशास्त्री,
५. तात्याशास्त्री पटवर्धन ।

*२८. व्रतकोशः (धर्मशास्त्र) जगन्नाथशास्त्रीहोशिंगकृत ।
प्राक्कथनलेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।
आकार डिमाई पृष्ठ ४०४
दाक्षिणात्य तथा औत्तराहों के प्रामाणिक निबन्धों के आधार पर इसकी रचना की गई है। आधारग्रन्थों का नाम तथा संकेत भी दिया गया है। इसके आधार पर व्रतों के सम्बन्ध में जानकारी निर्दिष्ट ग्रन्थ में उपलब्ध होगी। इस प्रकार का कोश धर्मशास्त्र, पुराण और तन्त्र ग्रन्थों के बनाने के उद्देश्य से यहाँ प्रथम भाग उल्लिखित है। किन्तु यह कोश अपने में पूर्ण है।

*२९. वृत्तिदीपिका (व्याकरण) मौनी श्रीकृष्णभट्टरचित ।
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—गङ्गाधरशास्त्री ।
आकार डिमाई पृष्ठ ९२
ग्रन्थकार नागेशभट्ट से अर्वाचीन हैं। इसमें वैयाकरणों के मत को सिद्धान्त पक्ष कहा गया है। ग्रन्थकार ने लक्षणा नहीं मानी है तथा व्यञ्जना का समर्थन किया है। ग्रन्थ में कुल १० प्रकरण हैं—शक्ति, लक्षणा, व्यञ्जना, धात्वर्थ, तिङर्थ, सनाद्यर्थ समासशक्ति, स्त्रीप्रत्ययार्थ, तद्धितार्थ, स्फोट। इसमें बोपदेव तक के मत पर विचार किया गया है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*३०. पदार्थमण्डनम् (न्याय) वेणीदत्त विरचित ।
आकार डिमाई पृष्ठ ३७
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—गोपालशास्त्रीनेने

रघुनाथ शिरोमणि रचित 'पदार्थतत्त्वनिरूपणम्' ग्रन्थ के खण्डन में इसकी रचना है। ग्रन्थकार ने ५ पदार्थ, ९ द्रव्य, २१ गुण, १ कर्म, अभाव २ धर्म ६ मानें हैं। चित्ररूप के सदृश चित्रगन्ध चित्ररस का भी समर्थन किया है। संक्षेपतः रघुनाथ शिरोमणि के स्वीकृत पदार्थों में से कुछ का समर्थन तथा कुछका खण्डन किया है।

३१. तन्त्ररत्नम् १–५ भागः मीमांसा) पार्थसारथिमिश्रविरचित ।
टी० रामचन्द्र दीक्षित सम्पादितम् ।

*आकार डिमाई,	प्रथमभाग	पृष्ठ १५४		
* ,, ,,	द्वितीयभाग	पृष्ठ १६४		
,, ,,	तृतीयभाग (१९६३)	पृष्ठ ३६२	कपड़े की जिल्द	५.५०
,, ,,	चतुर्थभाग (१९७२)	पृष्ठ ६५४	,, ,,	१३.००
,, ,,	पञ्चमभाग			(मुद्रयमाण)

इसमें मीमांसा सूत्रों पर पार्थसारथि मिश्र की व्याख्या है। मीमांसा के एक प्रस्थान का यह प्रमुख ग्रन्थ है।

*३२. तत्त्वसार (न्याय) राखालदासरचित ।
आकार डिमाई पृष्ठ ६०
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—हरिहरशास्त्री ।

विक्रम की २१वीं शती के प्रारम्भ में बंगाल के महान् नैयायिका के रूप में प्रसिद्ध थे। प्रकृत ग्रन्थ में प्रायः १८ शंकाओं का समाधान है। इस पर अमर्ष व्यक्त करते हुए किसी ने तत्त्वसारविचार की रचना की। जिसका खण्डन सम्पादक ने यथास्थान किया है। ग्रन्थ नैयायिकों के लिये अत्यन्त संग्राह्य है।

३३. न्यायकौस्तुभः (न्याय) [प्रत्यक्षखण्ड] लेखक—महादेवपुणतामकर ।

❀

[प्रथमभाग]

आकार डिमाई पृष्ठ १५६
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—डॉ० उमेशमिश्र ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

—

न्यायकौस्तुभः—अनुमानखण्डात्मक

आकार डिमाई—द्वितीय भाग (१९६७ ई०) पृ० ५४८ १०.००

लेखक—महादेवपुणतामकर

सम्पादक—स्वर्गीय दामोदरलालगोस्वामी

तृतीय भाग (मुद्रयमाण)

यह तत्त्वचिन्तामणि, आलोकदीधिति आदि प्रबन्धों के आधार-पर रचा गया है। इस भाग में मङ्गल-प्रामाण्य-प्रभा-सुवर्णतैजस-प्रत्यक्षकारण-मनः-समवाय-अभाव-सन्निकर्ष-निर्विकल्प-सविकल्प-संशय-विषमतावाद का विशद विवेचन है। ग्रन्थ मतमतान्तरों की आलोचना दृष्टि से रचा गया है।

*३४. अद्वैतविद्यातिलकम् (वेदान्त) समरपुङ्गवदीक्षितकृत। धर्मय्य-दीक्षितकृत दर्पणसहित। गणपतिलालझा एम० ए० द्वारा भूमिका-सहित सम्पादित।

आकार डिमाई—प्रथमभाग पृष्ठ ११४

वेदान्त के प्रत्येक अधिकरण का सिद्धान्त एवं अर्थ एक ही श्लोक में प्रकाशित किया गया है। केवल द्वितीयाध्याय के तृतीय-पाद में अंशाधिकरण तक ही मुद्रित है।

*३५. धर्मविजयनाटकम् (काव्य) भूदेवशुक्लरचित।

आकार डिमाई पृष्ठ ७७

सम्पादक—पं० नारायणशास्त्रीखिस्ते

अकबर के वेतनाध्यक्ष केशवदास की प्रेरणा से किसी कश्मीरी पण्डित की यह रचना है। काशी पर अधर्म ने आक्रमण किया किन्तु अन्त में धर्म की विजय हुई। नाटक में श्लोकों की भरमार है। श्लोक बड़े आकर्षक और प्रसादगुणयुक्त हैं।

*३६. आनन्दकन्दचम्पूः (काव्य) मित्रमिश्रकृत।

आकार डिमाई पृष्ठ २०९

सम्पादक—श्रीनन्दकिशोरशर्मा साहित्याचार्य

यह ओरछा नरेश वीरसिंह के राजपण्डित मित्रमिश्र की रचना है। १६०५ ई० इनका समय माना जाता है। इसमें भगवानकृष्ण-चन्द्र का चरित अङ्कित है। भाषा अनुप्रासमय है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*३७. उपनिदानसूत्रम् [छन्द]
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—डॉ० मङ्गलदेवशास्त्री।
आकार डिमाई

इसमें छन्दों का विवेचन है। ताण्डिन, ब्राह्मण, पिंगल, उक्तशास्त्र और निदान ये चार ग्रन्थ छन्दों के ज्ञान के लिए उत्तम हैं। इसमें आठ अध्याय हैं।

*३८. किरणावलीप्रकाशदीधितिः [न्याय] रघुनाथशिरोमणिकृत।
सम्पादक—पण्डित बद्रीनाथशास्त्री।
आकार डिमाई पृष्ठ ११२

उदयनाचार्य की किरणावली पर वर्धमानोपाध्यायकी प्रकाश-टीका अतिप्रशस्त है। उसके ऊपर यह दीधिति टीका है। इसमें विभागान्त गुणनिरूपण मुद्रित किया गया है।

*३९. रामविजयमहाकाव्यम् [काव्य] रूपनाथोपाध्यायरचितं।
आकार डिमाई पृष्ठ १४४
सम्पादक—गनपतिलालझा एम० ए०

रामचरित नव सर्गों में वर्णित है। इसकी रचना विक्रम की १९वीं शती का मध्य हो सकता है। इस पर सामान्यतः तुलसीदास की भी छाप दिखाई पड़ती है। वियोगिनी छन्द का अधिक प्रयोग है।

*४०. कालतत्त्वविवेचनम् (धर्मशास्त्र) रघुनाथभट्ट द्वारा प्रणीत।
आकार डिमाई पृष्ठ ५५२

सम्पादक—नन्दकिशोरशर्मा, प्राक्कथनलेखक म० म० पण्डित गोपीनाथकविराज।

प्र० भाग— पृ० २८०
द्वि० भा०

इसमें केवल काल के सम्बन्ध में विचार किया है। अभी ग्रन्थ पूरा मुद्रित नहीं है, श्राद्ध-प्रकरण का कुछ अंश भी इसमें आ गया है। ग्रन्थ अपने ढंग का अनूठा है।

---

*ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*४१. सिद्धान्तसार्वभौमः (ज्योतिष) मुनीश्वरविरचित ।
भूमिका लेखक एवं सम्पादक—श्रीमुरलीधरठक्कुरज्योतिषाचार्य ।
आकार डिमाई प्र० भा० पृष्ठ २१८
द्वि० भा० पृष्ठ १७६
तृ० भा० (मुद्रयमाण)

यह सिद्धान्तज्योतिष का ग्रन्थ है। इसके दो भागों में त्रिप्रश्नाधिकार तक मुद्रित है। सूर्यसिद्धान्तपद्धति का पोषक यह ग्रन्थ ज्योतिषशास्त्र का महत्वपूर्ण अङ्ग है। ग्रन्थकार कमलाकरभट्ट के समकालिक विद्वान् हैं।

*४२. भेदसिद्धिः [न्याय] विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यरचित । सम्पादक एवं भूमिकालेखक पं० सूर्यनारायणशुक्ल ।
आकार डिमाई पृष्ठ २६ + १०७ + १४०

१५५६ शक संवत् में बङ्गाल में उत्पन्न होकर ग्रन्थकार ने न्याय शास्त्र की श्रीवृद्धि की है। प्रकृत ग्रन्थ में अद्वैतवाद का साङ्गोपाङ्ग निराकरण करके भेद की सिद्धि की गई हैं। इसमें आत्मनानात्वसिद्धि तथा अनिर्वचनीयवाद, निर्गुणवाद, अवच्छेदवाद, प्रतिबिम्बवाद का खण्डन है। ग्रन्थ का केवल प्रथम परिच्छेद ही उपलब्ध है।

*४३. स्मार्तोल्लासः—१–३ भाग। [धर्मशास्त्र] शिवप्रसादपाठककृत ।
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—श्रीभगवत्प्रसादमिश्र वेदाचार्य ।
आकार डिमाई पृष्ठ १३०

आवसथ्याग्निसाध्य शुक्लयजुःगृह्यकर्म का साङ्गोपाङ्गविवेचन किया गया है। पारस्करगृह्यसूत्र के आधार पर इसकी रचना की गयी है। इसमें अन्य पद्धतियों से वैशिष्ट्य यह है कि शास्त्रीय आलोचना के साथ सिद्धान्त का प्रतिपादन भी है। ग्रन्थ भाषा तथा विषय की दृष्टि से उत्तम है।

*४४. शूद्राचारशिरोमणिः (धर्मशास्त्र) शेषकृष्णरचित ।
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—नारायणशास्त्रीखिस्ते ।
प्रथम भाग आकार डिमाई पृष्ठ १७६
द्वितीय भाग पृष्ठ

---

*तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

इसमें शूद्रों की उत्पत्ति, उनके कर्म का विचार एवं आचार संस्कार तथा व्यवहार का सुन्दर विवेचन है। पौरोहित्य करने वाले विद्वानों के लिये यह ग्रन्थ परमोपयोगी है।

*४५. किरणावलीप्रकाशः (न्याय) गुणनिरूपणम् । वर्धमानोपाध्यायकृतः।
आकार डिमाई पृष्ठ २२२ प्रथम भाग
,, द्वितीय भाग
सम्पादक पं० बद्रीनाथ शास्त्री एम० ए०
प्राक्कथनलेखक, म० म० पं० गोपीनाथ कविराज महोदय।

न्यायविषयक यह ग्रन्थ उदयनाचार्य की किरणावली की टीका है इस पर रघुनाथ शिरोमणि की दीधितिटीका भी पृथक् प्रकाशित की गयी है।

*४६. काव्यप्रकाशः (अलङ्कार शास्त्र) मम्मटाचार्यरचित, चण्डीदासकृत दीपिका टीका से युक्त।
आकार डिमाई पृष्ठ १९६

काव्य प्रकाश पर अनेक टीकाएं हैं जिनमें दीपिका का बड़ा महत्त्व है। दर्पणकार के प्रपितामह के तुल्य इस विद्वान् ने काव्यप्रकाश पर विचार की दृष्टि उत्पन्न की, जिससे परवर्ती टीकाकार इनका स्मरण करते हैं। यह टीकाशास्त्र का कार्य प्रकाशन में परम उपयोगी है।

* प्रथम भाग आकार डिमाई पृष्ठ १३६
द्वितीय भाग ,, (१९६५) ,, पृ० ६० १.५०
तृतीय भाग ,, (१९६५) ,, पृ० ५७० (कपड़े की जिल्द) १०.००

*४७. भेदजयश्रीः (माध्यवेदान्त) वेणीदत्ततर्कवागीशकृत।
सम्पादक एवं भूमिकालेखक पं० त्रिभुवनप्रसादउपाध्याय व्याकरणाचार्य
आकार डिमाई पृष्ठ १२+७२+१०

अद्वैतवाद का निराकरण करके मध्वसम्प्रदाय के अनुसार ब्रह्म, जीव और प्रधानरूप त्रित्ववाद का इस ग्रन्थ में प्रतिपादन है। ग्रन्थ की भाषा प्रवाहवती है। विषय दर्शन का गम्भीर होता ही है फिर

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

भी प्रसादमयी भाषा विषयग्रहण में सहकार करती है। मध्व-सम्प्रदाय के सिद्धान्त परिचय के लिये यह ग्रन्थ परम उपयोगी है।

*४८. सम्यक्सम्बुद्धभाषितं प्रतिमालक्षणम् [शिल्पशास्त्र]
सम्पादक—श्रीहरिदासमिश्र।
आकार पृष्ठ

*४९. भेदरत्नम् [न्याय] शङ्करमिश्रकृत।
आकार डिमाई पृष्ठ ४+७४+४४
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—प० सूर्यनारायणशुक्ल

इसके रचयिता प्रख्यात नैयायिक हैं। इसमें अद्वैतवाद का खण्डन करके भेद सिद्ध किया गया है। इसका खण्डन मल्लनाराध्याचार्य ने अद्वैतरत्नम् में और मधुसूदनसरस्वती ने अद्वैतरत्नरक्षण ग्रन्थ में किया है। इसके समर्थन में अद्वैतरत्नपरीक्षा ग्रन्थ की रचना पं०-सूर्यनारायण शुक्ल ने की है जो इसके साथ ही मुद्रित है।

*५०, मातृकाचक्रविवेकः [तन्त्र] स्वतन्त्रानन्दनाथरचित। शिवानन्दकृत व्याख्यासहित। प्राक्कथनलेखक म० म० पं० गोपीनाथ कविराज एवं सम्पादक—ललिताप्रसादडबराल, व्याकरणाचार्य।
आकार डिमाई पृष्ठ १९०

महाशक्ति त्रिपुरसुन्दरी के स्वरूप विवेक के लिए इस ग्रन्थ की रचना हुई है। इसमें ५ खण्ड हैं। जैसे—१. तात्पर्यविवेकः, २. सुषुप्तिविवेकः, ३. स्वप्नविवेकः, ४. जाग्रद्विवेकः, ५. तुर्यविवेकः। भूमिका में ग्रन्थ का सारांश प्रौढ़ि के साथ विवेचित है।

*५१. [अ] अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् [वेदान्त]
श्री ब्रह्मानन्दसरस्वती विरचित।

*५२. [ब] नृसिंहविज्ञापनम् [वेदान्त] श्रीनृसिंहाश्रम विरचित।
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—पं० सूर्यनारायण शुक्ल।
आकार पृष्ठ

*५३. नृसिंहप्रसादः [व्यवहारसार] धर्मशास्त्र दलपतिराजविरचित।
आकार डिमाई पृष्ठ ३०५

---

* 'अ' तथा 'ब' संख्यक ग्रन्थ एक में ही सम्पादित हैं।

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

सम्पादक एवं भूमिका लेखक—विनायकशास्त्रीटिल्नु।

इसमें विवादग्रस्त विषयों पर न्याय करने की विधि का विवेचन है। इसके लिये न्याय के स्थान कितने हैं, क्या करणीय हैं, क्या अकरणीय है? इस प्रक्रिया से अपराधभेद, दण्डभेद की व्यवस्था है।

*५४. नृसिंहप्रसादः [प्रायश्चित्तसार] (धर्मशास्त्र) दलपति महाराजकृत।
सम्पादक—नन्दकिशोरशर्मा साहित्याचार्य।
आकार डिमाई पृष्ठ २३६

इसमें प्रायश्चित्तीय कर्म, स्थिति तथा उसकी विधि का विशेष रूप से विवेचन है। ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है।

*५५. नृसिंहप्रसादः [श्राद्धसार] धर्मशास्त्र दलपतिराजकृत।
आकार डिमाई पृष्ठ १६८
सम्पादक—विद्याधरमिश्र।

ग्रन्थ के १२ खण्डों में से इसमें श्राद्ध का अर्थ उपयोग, विधि, एवं अधिकारी आदि का सप्रमाण विवेचन है।

*५६. भगवन्नाममाहात्म्यसङ्ग्रहः [भक्तिशास्त्र] रघुनाथेन्द्रयतिकृतः।
सम्पादक एवं टीकाकार पं० अनन्तशास्त्रि फडके।
आकार डिमाई पृष्ठ १७३

इसमें भगवन्नाम की महिमा पर विद्वानों तथा ऋषियों के मत, राम, कृष्ण, शिवनामों के महत्त्व, इनके जपसे फलप्राप्ति आदि का विशद विवेचन है तथा पाठभेद, उद्धरण आदि संकेतों से युक्त है।

*५७. गणितकौमुदी [गणित] नारायणपण्डितकृत।
आकार डिमाई प्रथमभाग
,, ,, द्वितीयभाग पृष्ठ ४१२ (१९४२) २.५०
सम्पादक—पं० पद्माकर द्विवेदी।

गणित शास्त्र का यह प्रामाणिक ग्रन्थ दो भागों में मुद्रित है। श्रेणी व्यवहार विषय तक इसके प्रथम भाग में मुद्रित है। यह शक सं० १३वीं शती की रचना है। गणित के छात्रों के लिये यह ग्रन्थ परम उपयोगी है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*५८. ख्यातिवादः [दर्शन] शङ्करचैतन्यभारतीरचित ।
प्राक्कथनलेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज महोदय ।
आकार डिमाई पृष्ठ ६६

इसमें ख्याति के सम्वन्ध में समान दार्शनिकों के मतों का विवेचन है और वेदान्त के विभिन्न मतों का सिद्धान्त रूपमें समर्थन किया गया है तथा अनिर्वचनीयख्याति में उद्भावित गौरव का समाधान करके निम्बार्क तथा रामानुजपक्ष का खण्डन भी वर्णित है। ग्रन्थ दर्शन का है फिर भी प्राञ्जल भाषा ने इसे बोधगम्य बना दिया है ।

*५९. साङ्ख्यतत्त्वालोकः [सांख्यशास्त्र] स्वामीहरिहरानन्दारण्यरचित ।
आकार डिमाई पृष्ठ १०८
प्राक्कथनलेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज,
भूमिकालेखक एवं सम्पादक—ज्ञानेश्वरघोष ।

यह सांख्यसिद्धान्तों का प्रतिपादक निबन्धग्रन्थ है। इसमें सांख्य के समग्र सिद्धान्त क्रम से प्रतिपादित हैं। शास्त्र के रहस्य ज्ञान के लिये ग्रन्थ परम उपयोगी है ।

*६०. शाण्डिल्यसंहिता [भक्तिशास्त्र] प्रथमभाग महर्षिशाण्डिल्यकृत ।
सम्पादक—अनन्तशास्त्रीफडके ।
आकार डिमाई पृष्ठ १४८
,, प्रथम भाग
,, द्वितीय भाग ,, २३४

इसमें धर्म-अर्थ, काम-मोक्ष और भक्ति नाम के पांच खण्ड हैं। यह वैष्णव सम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसमें केवल भक्ति खण्ड है। अन्य खण्ड अभी उपलब्ध नहीं हुए हैं ।

*६१. दक्षिणामूर्तिसंहिता [तन्त्र]।
सम्पादक—पण्डितनारायणशास्त्री खिस्ते ।
आकार पृष्ठ

*६२. नृसिंहप्रसादः (तीर्थसार) [धर्मशास्त्र] दलपतिराजविरचित ।
सम्पादक—पं० सूर्यनारायण शुक्ल ।
आकार डिमाई पृष्ठ १०३

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

यह ग्रन्थ तीर्थव्यवहार, प्रायश्चित्त-श्राद्धसार आदि नाम से १० खण्डों में रचित है। इसमें दक्षिण भारत के १५ तीर्थों का वर्णन है। तीर्थयात्रा करने वालों के लिए परमोपयोगी है।

*६३. भक्त्यधिकरणमाला (भक्ति-शास्त्र) नारायणतीर्थस्वामिकृत।
सम्पादक एवं टीकाकार—अनन्तशास्त्री फडके।
आकार डिमाई पृष्ठ ९६

महर्षि शाण्डिल्यरचित सूत्रों की व्याख्या के रूपमें इस ग्रन्थ की रचना है। इसमें अनन्तशास्त्रीफड़के की टीका भी मुद्रित है। ग्रन्थकार ने भक्तिचन्द्रिका में जिन अंशों पर गम्भीर विचार नहीं किया है, उनपर भी इसमें मार्मिक विवेचन है। ग्रन्थ का प्रथम भाग मात्र ही मुद्रित है।

*६४. वसिष्ठदर्शनम् (दर्शनम्) आत्रेयभीखनलालसङ्कलित।
आकार डिमाई पृष्ठ ४७२

योगवासिष्ठ तथा महारामायण से सङ्कलित यह सिद्धान्तात्मक ग्रन्थ है।

*६५. त्रिस्थलीसेतुः [धर्मशास्त्र] भट्टोजीदीक्षित।
आकार डिमाई पृष्ठ ४०

इसमें तीर्थविधि का सामान्यतः वर्णन करके काशी-प्रयाग-गया आदि तीर्थों की विशेष महिमा वर्णित है।

*६६. तीर्थेन्दुशेखरः (धर्मशास्त्र) नागेशभट्टकृत।
आकार डिमाई पृष्ठ ५६

इसमें तीर्थों के अधिकारी आदि के निर्णय के अनन्तर प्रयाग, काशी तथा गया आदि तीर्थों की विधि का विचार है।

*६७. काशीमृतिमोक्षविचारः (धर्मशास्त्र) सुरेश्वराचार्यकृत।
भूमिका लेखक एवं सम्पादक—पं० सूर्यनारायणशुक्ल।
आकार डिमाई पृष्ठ १८

इसमें काशी, वाराणसी, अतिमुक्त, अन्तर्गृह नाम के चार क्षेत्रों का परिमाण निर्णय किया है तथा उन-उन क्षेत्रों में मृत्यु होने

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

से सारूप्य, सालोक्य, सायुज्य, सान्निध्यरूप मुक्तियों के मिलने का विधान है।

६५, ६६, ६७, संख्या के ग्रन्थ एक में ही निबन्धित हैं।

*६८. मध्वमुखालङ्कारः (वेदान्त) वनमालिमिश्ररचित।
प्राक्कथनलेखक म० म० पं० श्री गोपीनाथकविराज।
आकार डिमाई पृष्ठ १४८

इसमें मध्वाचार्य को वायु का अवतार तथा उनके शास्त्र को सच्छास्त्र सिद्ध करने के पश्चात् ब्रह्मसूत्र की चतुःसूत्री पर गम्भीर विचार करके शेष सूत्रों का तात्पर्य सङ्कलित किया गया है।
सम्पादक—श्रीनृसिंहाचार्यवरखेड़कर।

*६९. संक्षेपशारीरकम् [वेदान्तः] सर्वज्ञमुनिरचित। नृसिंहाश्रमकृत तत्त्वबोधिनीसहित। सम्पादक—पं० सूर्यनारायणशुक्ल

प्रथम भाग	आकार डिमाई	पृष्ठ	२७०
द्वि० भाग	,,	,,	२६९
तृ० ,,	,,	,,	२३१
चतुर्थ भाग	,,	,,	२३८
पंचम ,,	,,	,,	१०१

यह वेदान्त का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। १६वीं शती में इस पर तत्त्वबोधिनी टीका रची गई और १९३६ में प्रथम बार मुद्रित हुई।

*७०. भास्करी (शैवदर्शन) ईश्वरप्रत्यभिज्ञानविमर्शिनीव्याख्या, अभिनवगुप्तपादभास्करकृत टीकासहित।

आकार डिमाई	१	भाग	पृष्ठ	४२५
*,,	२	,,	,,	३४१
,,	३	,,	,,	३३१

उत्पलदेवकृत ईश्वरप्रत्यभिज्ञा के साथ दोनों टीकाएं मुद्रित हैं। यह ग्रन्थ प्रथम द्वितीय भाग में मुद्रित है। तीसरे भाग में अंग्रेजी में ग्रन्थ की आलोचना है। यह शैवदर्शन का प्रामाणिक ग्रन्थ है।

*७१. भक्तिनिर्णयः (भक्तिशास्त्र) अनन्तदर्शनरचित।

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

सम्पादक—अनन्तशास्त्रीफडके ।

आकार डिमाई पृष्ठ ८४

इसमें दो प्रकरण है। प्रथम में भजन, संकीर्तन, सेवा, श्रवण, मोक्ष-साधन का प्रतिपादन है। दूसरे में भक्ति और ज्ञान का समुच्चय, शिव-विष्णु में अभेद, अजामिलोपाख्यान, प्रायश्चित्त और नामोच्चारण के लिये अधिकारिभेद का सुन्दर विवेचन है।

*७२. नाममाहात्म्यम् (भक्तिशास्त्र) आश्रमस्वर्गंकृत ।
सम्पादक—पं० अनन्तशास्त्रीफडके।
आकार डिमाई पृष्ठ २४

ग्रन्थकार के वैष्णवकण्ठाभरण का यह एक प्रकरण है। पूरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं है, केवल यही भाग मिल सका है। इसमें अर्थज्ञान के बिना भी नाम जपने वाला मनुष्य परमकल्याण प्राप्त करता है, कहा गया है।

७१, ७२ सङ्ख्यक ग्रन्थ एक साथ निबन्धित हैं।

*७३. उपेन्द्रविज्ञानसूत्रम् [वेदान्तः] उपेन्द्रदत्तशर्माविरचित स्वोपज्ञटीका-युत । मङ्गलदेवशास्त्री द्वारा सम्पादित । [प्र० भा० ७३]
आकार डिमाई पृष्ठ १३०

यह ग्रन्थ वेदान्तसिद्धान्तज्ञान में परम उपयोगी है। स्वामी-भास्करानन्द के शिष्य अनन्तराममिश्र के शिष्य उपेन्द्रदत्त ने इस ग्रन्थ की रचना की है। म० म० पं० गोपीनाथकविराज तथा डॉ० मंगलदेव-शास्त्री द्वारा विशद भूमिका से युक्त यह ग्रन्थ संकलनीय है।

७४. आश्वलायनश्रौतसूत्रम् (वेद) सिद्धान्तिभाष्यसहित ।
सम्पादक—डॉ० मङ्गलदेवशास्त्री
प्र० भा० आकार डिमाई पृष्ठ १२५
द्वि० भा० ,, ,, पृष्ठ २३२ ४.००

यह ग्रन्थ वैदिक यज्ञों का प्रतिपादक है। इसमें केवल दो अध्याय हैं। समग्र ग्रन्थ का प्रकाशन विचाराधीन है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*७५. द्वैतनिर्णयसिद्धान्तसङ्ग्रहः (धर्मशास्त्र) भानुभट्टप्रणीत ।
सम्पादक—सूर्यनारायणशुक्ल ।
आकार डिमाई पृष्ठ १३६

द्वैतनिर्णय नाम के तीन ग्रन्थों में से यह शङ्करभट्टकृत सारसंग्रह है। इसमें व्रत, पर्व, अशौच, श्राद्ध, होम, तीर्थयात्रा, मांसभक्षण, दान, प्रायश्चित्त आदि का निर्णय है। धर्मशास्त्र की उपयोगी जानकारी के लिए पुस्तक संग्राह्य है।

*७६. मनोऽनुरञ्जननाटकम् (साहित्य) अनन्तदेवरचित ।
सम्पादक—अनन्तशास्त्री फड़के ।
आकार डिमाई पृष्ठ १११

इसमें गोवर्धनपूजा तथा चीरहरणलीला का मर्यादित रूप में वर्णन है। पाँच अङ्कों का यह नाटक आपदेव के पुत्र की कृति है। यह ईसा की १५वीं शती के आरम्भ की रचना है। इसमें भक्ति का उत्तम परिपोष किया गया है। नाटक की भाषा बड़ी मोहक तथा प्रसादगुण से युक्त है।

*७७. सुभद्रापरिणयः (साहित्य) व्यास श्रीरामदेवकविकृत ।
सम्पादक—नारायणशास्त्री खिस्ते ।
आकार डिमाई पृष्ठ ७६

यह छाया नाटक के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें एक ही अङ्क है। सुभद्रा और अर्जुन के प्रेम का वर्णन, उसका अपहरण, यादवों का युद्धोद्योग और कृष्ण के अनुरोध पर विवाह, इसकी कथावस्तु है। संस्कृत साहित्य में ऐसे नाटक कम ही हैं।

*७८. तत्त्वचिन्तामणिः, प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादः (न्याय) गङ्गेशोपाध्यायरचित। प्रगल्भरचित प्रगल्भ्या, महेशठक्कुररचित आलोकदर्पणं, मधुसूदनरचित यह ग्रन्थ आलोककण्टकोद्धार, पक्षधरोपनामक जयदेवरचित आलोक, सूर्यनारायणशुक्लरचित मिताक्षरा से विभूषित है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

सम्पादक—पं० सूर्यनारायणशुक्ल
आकार डिमाई पृष्ठ १८७
यह नव्यन्यायशास्त्र का आदि ग्रन्थ है। इसमें मैथिलसम्प्रदाय की प्रसिद्ध टीकाओं का संग्रह है। बंगाली सम्प्रदाय के आक्षेपों का सुन्दर समाधान है। दोनों सम्प्रदाय के ग्रन्थों के मुद्रण का उपक्रम विश्वविद्यालय के विचाराधीन है।

७८. तत्त्वचिंतामणिः प्रत्यक्षखण्डे मङ्गलवादः (न्याय) मथुरानाथकृत माथुरी सहित। पं० श्रीबदरीनाथशुक्ल द्वारा सम्पादित। द्वितीय परिवर्धित संस्करण। आकार रायल (१९७६) पृ० ७५ १५-००
नव्यन्याय का मूल ग्रन्थ 'तत्त्वचिन्तामणि' है। इस पर नैयायिकों ने अनेक टीकाएँ रची हैं। जिनमें मथुरानाथ की टीका अधिक सरल तथा अपने में पूर्ण है। इसका प्रकाशन बहुत पूर्व हुआ था। यह ग्रन्थ इस समय लगभग ५० वर्षों से अलभ्य था।

७९. तौतातिकमततिलकम्, १-३ भाग (मीमांसा) भवदेवरचित। श्रीचिन्नस्वामी तथा पट्टाभिरामशास्त्री द्वारा सम्पादित।
*आकार डिमाई प्र० भाग पृष्ठ २३८
* ,, द्वि० ,, ,, ३३०
,, तृ० ,, ,, ४५५
मीमांसाशास्त्र का यह ग्रन्थ कुमारिलभट्ट के सिद्धान्त का पोषक है।

*८०. चलराशिकलनम् (गणित) सुधाकरद्विवेदी द्वारा रचित।
सम्पादक—प० बलदेवमिश्र।
आकार डिमाई प्र० भाग पृष्ठ १२०
,, द्वि० ,, ,, २७०
यह गणितशास्त्र का ग्रन्थ है। ग्रन्थकार ने आधुनिक और प्राचीन गणित के तुलनात्मक विवेचन के साथ ग्रन्थ की हिन्दी में रचना की है। यह अपने विषय की बहुमूल्य रचना है।

*८१. दशपाद्युणादिवृत्तिः (व्याकरण) अनिर्दिष्टकर्तृका।
सम्पादक एवं भूमिका लेखक—पं० युधिष्ठिरमीमांसक।
आकार डिमाई पृष्ठ ४४०

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

यह उणादि के सूत्र शाकटायनप्रणीत पंचपादी से विलक्षण वृत्ति है। इसमें सूत्र भी नये हैं तथा वृत्ति उत्तम है। प्रत्ययों के अधिकार अनुबन्ध पाणिनि के अनुकूल हैं।

*८२. विक्रमाङ्कदेवचरितमहाकाव्यम् (काव्य) श्रीविल्हणविरचित।
सम्पादक एवं भूमिकालेखक—मुरारीलालनागरशास्त्री।
आकार पृष्ठ ३९६

*८३. भास्करी (शैवदर्शन) द्वितीय भाग, अभिनवगुप्तपाद तथा भास्करविरचित टीकासहित।
सम्पादक—प्रो०ओ०के० सुब्रह्मण्य अय्यर एवं डॉ०के०सी० पाण्डेय।
आकार डिमाई पृष्ठ ३४२

*८४. भास्करी (शैवदर्शन) तृतीय भाग, अभिनवगुप्तपाद तथा भास्करकृत टीकासहित।
सम्पादक—डॉ० के० सी० पाण्डेय।
आकार डिमाई पृष्ठ ३३१

८५. धर्मशास्त्रीयव्यवस्थापत्रसङ्ग्रहः (धर्मशास्त्रम्), सम्पादक—डॉ०सुभद्रझा।
आकार डिमाई (१९५७) पृष्ठ ७८०, कपड़े की जिल्द, १०.००
इसमें न्यायालय में उपस्थित वादों पर श्रीवैद्यनाथमिश्र तथा अन्य विद्वानों द्वारा दी गई व्यवस्था का संग्रह है। यह संग्रह वकीलों तथा धर्मशास्त्रीय व्यवस्था लिखने वाले विद्वानों के लिए संग्रहणीय है। अंग्रेजी राज्य में न्यायव्यवस्था के इतिहास का यह महत्त्वपूर्ण अङ्ग है।

८६. गर्गसंहिता (पुराण), विभूतिभूषणभट्टाचार्य द्वारा सम्पादित।
आकार रायल प्र० भा० (१९५९) पृष्ठ ६६८, कपड़े की जिल्द, १०.००
इसमें १—गोलोकखण्ड, २—वृन्दावनखण्ड. ३—गिरिराजखण्ड, ४—माधुर्यखण्ड, ५—मथुराखण्ड, ६—द्वारकाखण्ड, इस प्रकार छः खण्ड हैं। यह ग्रन्थ श्रीमद्भागवत का पूरक माना जाता है।

८७. बृहच्छब्देन्दुशेखरः (व्याकरण) नागेशभट्टरचित। १—३ भाग।
सम्पादक—डॉ० सीतारामशास्त्री।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

आकार डिमाई (१९६०) पृष्ठ २३२८, कपड़े की जिल्द। ४५.००
यह वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी का टीका-ग्रन्थ है। यही लघुशब्देन्दुशेखर का आधार है। इस ग्रन्थ का यह प्रथम मुद्रण है।

नोट—उक्त ग्रन्थ ३ भागों में मुद्रित है, किन्तु मूल्य एक साथ ही रुपया है। ४५.००

८८. पदवाक्यरत्नाकर: (न्यायशास्त्र) गोकुलनाथोपाध्यायविरचित यदुनाथमिश्रकृतगूढार्थदीपिकायुक्त।
सम्पादक—श्री नन्दीनाथमिश्र।
आकार रायल (१९६०) पृष्ठ ९४२, कपड़े की जिल्द, १५.००
यह न्यायशास्त्र के शब्दखण्ड का ग्रन्थ है। इसमें २३ प्रकरण हैं तथा १६७ कारिकाएँ हैं। शब्दशक्तिप्रकाशिका की भाँति इसमें शब्द, पद, पदार्थ, सम्बन्ध तथा कारक का न्यायमत से विचार किया गया है। शब्दशक्तिप्रकाशिका की अपेक्षा इसकी विशेषता है—स्फोट के सम्बन्ध में गम्भीर विचार और पाणिनीय सूत्रों का आश्रयण।

८९. काव्यप्रकाश:—१-५ उच्छ्वास (अलङ्कारशास्त्र)। आचार्यमम्मट-कृत, गोकुलनाथोपाध्यायरचित काव्यप्रकाशविवरणयुक्त।
सम्पादक—कविशेखरबदरीनाथ झा।
आकार डिमाई (१९६१ , पृष्ठ २७४, कपड़े की जिल्द, ८.००
यह काव्यप्रकाश की प्रथम दार्शनिक टीका है। मात्र १-५ उल्लास तक ही यह टीका उपलब्ध हो सकी है।

९०. तारिणीपारिजात: (तन्त्र) विद्वदुपाध्यायविरचित।
सम्पादक—रमानाथझाशर्मा
आकार डिमाई (१९६१) पृष्ठ १४४, कपड़े की जिल्द, ४.००
तारादेवी की उपासना का यह प्रामाणिक ग्रन्थ है।

९१. वाक्यपदीयम्—प्रथमकाण्डम् [द्वितीयसंस्करण] (व्याकरण) आचार्यभर्तृहरिविरचित, पुण्यराजकृतविवरण तथा रघुनाथशर्मा कृत अम्बाकर्त्री टीकासहित। सम्पादक—पं० रघुनाथशर्मा, आकार रायल (१९७६) पृष्ठ २३५ २६.५०

---

*ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

,, द्वितीयकाण्डम् (१९६८) पृ० ५९१, कपड़े की जिल्द, २८.००

,, तृतीयकाण्डम् [प्र० भाग] (१९७४) पृ० ३४२, ,, ,, २५.००

इस ग्रन्थ में वाक्यार्थ के सम्बंध में आठ पक्षों को उपस्थापित करके वाक्य और वाक्यार्थ के सम्बन्ध में वैयाकरणमत विवेचित है। इस ग्रन्थ में प्रामणिक स्वोपज्ञटीका भी है। श्री को० अ० सुब्रह्मण्य अय्यर की भूमिका तथा पं० श्री बलदेव उपाध्याय के प्राक्कथन से ग्रन्थ और ग्रन्थकार के विषय में विशद परिचय मिलता है।

वाक्यपदीय का तृतीयकाण्ड प्रकीर्णकाण्ड के नाम से ख्यात है, इसमें जाति, द्रव्य, सम्बन्ध, भूयोद्रव्य, गुण, दिक्, साधन, क्रिया, काल, पुरुष, संख्या, उपग्रह, लिङ्ग और वृत्तिसमुद्देश चौदह प्रकरण हैं। यह काण्ड तीन भागों में प्रकाशित किया जायेगा।

१२. सूक्तिमुक्तावली (गद्यकाव्य) गोकुलनाथोपाध्यायविरचित।
सम्पादक—पं० भूपनारायणझा।

आकार रायल (१९६३) पृष्ठ १४८, कपड़े की जिल्द, ७.५०

यह गद्यकाव्य है। इसमें ७ आख्यायिकाएँ हैं। इसकी भाषा प्रवाहयुक्त है। इसका मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार है।

१३. 'न च' रत्नमालिका (न्याय) श्रीशास्त्रीशर्मारचित स्वोपज्ञ-नूतनालोकसहित। सी० के० रामन्-नम्पियार, टी० रामवारियर्, के० अच्युतप्पोतुवाल्रचित आलोकप्रकाशसहित।

आकार रायल (१९६५) पृष्ठ २१८, कपड़े की जिल्द, ६.५०

इसमें तीन आवलियाँ हैं। प्रथम आवलिमें १९ 'न च' द्वारा सामान्यधर्मावच्छिन्न आधारत्व और आधेयत्व की अतिरिक्तता सिद्ध की गयी है। द्वितीय आवलिमें २५ 'न च' द्वारा हेत्वधिकरण-निष्ठत्व का स्वरूपविचार है। तृतीय आवलिमें ५४ 'न च' द्वारा प्रतिबन्धकत्व का विचार है।

१४. श्रीमद्भगवद्गीता (१-६ अध्याय) भगवद्भास्करभाष्ययुता।
सम्पादक—डॉ० सुभद्रा झा।

आकार डिमाई (१९६५) पृष्ठ २५६, कपड़े की जिल्द, ५.५०

यह भाष्य निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुसार लिखा गया है। यद्यपि यह पूर्णरूपेण उपलब्ध नहीं है, तथापि ग्रन्थकार के महनीय विचार विचारकों के लिए परम उपयोगी हैं।

९५. पारसीकप्रकाशः (कोश) विहारीकृष्णदासरचित।

सम्पादक—पं० विभूतिभूषणभट्टाचार्य।

आकार डिमाई (१९६५). पृष्ठ २१४, कपड़े की जिल्द, ५.५०

यह एक पारसी-संस्कृत-अंग्रेजी शब्दों का कोश है। इसमें व्याकरण-भाग तथा शब्दसूची भी संलग्न है। व्याकरणभाग की रचना ग्रन्थकार की ही है।

९६. हयतग्रन्थः (अरबीय सिद्धान्तज्यौतिष)। सम्पादक-विभूतिभूषणभट्टाचार्य।

आकार डिमाई (१९६७) पृष्ठ १८६, कपड़े की जिल्द, ६.००

यह ग्रन्थ अरबी भाषा के एक ग्रन्थ का अनुवाद है। ग्रन्थकार ने संज्ञा-नामों में परिवर्तन नहीं किया है। इसमें ग्रहगणित, भूगोलपिण्ड तथा रेखागणित का समुचित विवेचन है।

९७. बृहत्संहिता (ज्यौतिष) वराहमिहिराचार्यकृत। भट्टोत्पलकृत विवृतिसहित।

सम्पादक—श्री-अवधविहारीत्रिपाठी।

आकार रायल प्र० भाग पृष्ठ ६०८, कपड़े की जिल्द (१९६८) १८.००

„ „ द्वि० „ „ ७१५ „ „ (१९६८) २०.००

इसके प्रथमभाग के ५६६ पृष्ठों में उपनयन से पिटक लक्षण तक ५१ अध्याय हैं। फलितज्योतिष में यह प्रामाणिक ग्रन्थ है। सुधाकरद्विवेदी के बाद अवधविहारीत्रिपाठी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी बन गया है। इसका द्वितीयभाग वास्तुविद्या से १०६ अध्यायों में प्रतिमा से जातक, गोचर, पुरुष, स्त्री, पशु-लक्षण आदि विषयों से सज्जित प्रत्येक विद्वान् के लिए संग्राह्य है।

९८. स्कन्दशारीरकम् (ज्यौतिष) सम्पादक—श्रीगणेशदत्तपाठक।

आकार डिमाई (१९६८), पृष्ठ ४००, कपड़े की जिल्द १५.००

इसके प्रथम अध्याय में रेखाओंकी संज्ञाएँ कही गई हैं, शेष में लक्षण और फल है। यह ग्रन्थ सामुद्रिकशास्त्र का है। इस पर संस्कृत टीका पर्याप्त सहायता देती है।

९९. द्वैतपरिशिष्टम् (धर्मशास्त्रीयमैथिलनिबन्धरूपम्) श्रीकेशवमिश्र द्वारा विरचित । सम्पादक—पं० श्रीदुर्गाधरझा ।
आकार रायल (१९७२) पृष्ठ १८४, कपड़े की जिल्द ८.००

१००. लघुकाशिका (व्याकरण) ।
लेखक एवं सम्पादक—श्रीसुदर्शनाचार्यत्रिपाठी ।
पूर्वार्धं आकार रायल (१९७३) पृष्ठ २७६, कपड़े की जिल्द १६.२५
उत्तरार्धं ,, (१९७४) ,, ३१६ ,, ,, १६.००
यह ग्रन्थ काशिका का लघुरूप है। इसमें काशिका के उदाहरणाधिक्य को संक्षिप्त करके उपादेय बनाने का भरसक प्रयास किया गया है। इसमें बहुत ही सरल प्रकार से प्रयोगों की सिद्धि की गयी है।

१०१. पाणिनीयप्रबोधः (व्याकरण) श्रीगोपालशास्त्री दर्शनकेशरीकृत ।
आकार डबलक्राउन, (१९७०) पृष्ठ ३१२, कपड़े की जिल्द; ४.५०
इसमें अति संक्षिप्त पाणिनीयव्याकरण का संग्रह है। यह लघुसिद्धान्तकौमुदी के विकल्प में रचा गया है। इसमें सूत्र से ही सूत्रार्थ निकालने की प्रक्रिया का अवलम्बन किया गया है।

१०२. प्राकृतप्रकाशः (प्राकृतव्याकरण) श्रीवररुचिविरचित (परिवर्धित संस्करण) ।
सम्पादक—आचार्य श्रीबलदेवउपाध्याय ।
आकार रायल (१९७२) पृष्ठ ४२९, कपड़े की जिल्द ३७.७५
यह ग्रन्थ संजीवनी, सुबोधिनी, मनोरमा, प्राकृतमञ्जरी नामक चार टीकाओं से युक्त है। तथा सम्पादक की हिंदी टीका भी साथ में प्रकाशित है।

१०३. कल्किपुराणम् (पुराण) सम्पादक—डॉ० अशोकचटर्जी शास्त्री
आकार रायल (१९७२) पृष्ठ २७६, कपड़े की जिल्द, १८.००
यद्यपि उपपुराणों में अन्यतम कल्किपुराण का प्रकाशन अनेक बार कलकत्ता तथा वाराणसी से हो चुका है, तथापि अनेक हस्तलेखों तथा प्रकाशित संस्करणों से पाठभेद मिलान कर इस पुराण का प्रस्तुत समालोचनात्मक संस्करण सर्वतः प्रथम सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-

विश्वविद्यालय ने निकाला है। परिशिष्ट में समीक्षण, पुराणगत विशिष्ट शब्दों की सूची तथा श्लोकानुक्रमणिका संलग्न है। ग्रन्थ-माला के प्रधानसंपादक 'वागीश शास्त्री' की आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका से प्रस्तुत संस्करण और भी उपादेय बन गया है।

१०४. उकराग्रन्थः (गणित) पारसी से संस्कृतभाषा में अनूदित।
सावजूसयुस द्वारा विरचित। सम्पादक—श्रीविभूतिभूषणभट्टाचार्य।
(मुद्रित)
इस ग्रन्थ में ३ अध्याय हैं। लगभग ६५ श्लोकों से यह ग्रन्थ समन्वित है। इस ग्रन्थ में दुरूह विषयों को चित्रों द्वारा समझाने का प्रयत्न किया गया है।

१०५. नानकचन्द्रोदयमहाकाव्यम् (काव्य) श्रीदेवराजशर्मविरचित।
सम्पादक—श्रीव्रजनाथझा।
आकार रायल, पृष्ठ ७००, अध्याय २१, (मुद्रित)
इस महाकाव्य में उदासीनमत का संस्कृत में सारगर्भ विवेचन है। सिक्खों की वेषभूषा, गुरुनानक की गोरखनाथ तथा उनके शिष्यों के साथ हुई वार्ता का उल्लेख, गुरुनानक द्वारा भ्रमण किये गये स्थानों का वर्णन इत्यादि विशदरूप में वर्णित है।

१०६. काव्यप्रकाशः—पं० परमानन्दचक्रवर्ति कृत विस्तारिका से विभूषित।
सम्पादक—डॉ० गौरीनाथशास्त्री।
आकार डिमाई (१९७६) पृ० २२६, कपड़े की जिल्द, २८.००
मम्मटरचित काव्यप्रकाश साहित्यशास्त्र का शिरोमणि ग्रन्थ है, इस पर 'विस्तारिका' टीका दार्शनिक दृष्टिकोण से लिखी गई है। इसके प्रकाशित होने से एक नई वस्तु उपलब्ध होगी।

१०७. बौधायनशुल्वसूत्रम्. सम्पादक—विभूतिभूषणभट्टाचार्य।
(मुद्रित)
आकार रायल

१०८. जैमिनीयं सामगानम्. सम्पादक—विभूतिभूषणभट्टाचार्य।
आकार रायल (१९७६) पृ० ३५४, कपड़े की जिल्द, ४५.५०

१०९. गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः (तन्त्र) सम्पादक—पं० जनार्दनपाण्डेय
आकार रायल (१९७३) पृ० ९८, कपड़े की जिल्द, १०.५०

११०. गोरक्षसंहिता (तन्त्र) [प्रथम भाग] श्रीगोरक्षनाथविरचित।
सम्पादक—श्रीजनार्दनपाण्डेय।

यह एक विशाल ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की पुष्पिका में इसे 'शतसाहस्रीसंहिता' कहा गया है। इसमें २७ पटल और लगभग ५,००० श्लोक हैं।

आकार रायल (१९७९) पृ० ४१८, कपड़े की जिल्द, ५०.१०

१११. प्रक्रियाकौमुदी (व्याकरण) [प्रथम भाग] प्रकाशटीकोपेता।

सम्पादक—पं० मुरलीधरमिश्र।

आकार रायल (मुद्रित)



सरस्वतीभवन-अध्ययनमाला

*१. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग १ ।

आकार डिमाई पृष्ठ ५८

इसमें निम्नलिखित ३ लेखों का संग्रह है—

१. स्टडीज इन हिन्दू ला (हिन्दू-विधिशास्त्र का अध्ययन), लेखक—गङ्गानाथझा ।

*२. दि न्यू प्वाइण्ट आफ न्यायवैशेषिक फिलासफी (न्यायवैशेषिक दर्शन का दृष्टिकोण), ले०—गोपीनाथकविराज ।

३. निर्माणकाय, ले०—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

*२. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग २ ।

आकार डिमाई पृष्ठ २०४

इसमें निम्नलिखित १२ लेखों का संग्रह है ।

१. परसुराममिश्र एलाइज वाणीरसालराय लेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।

२. इन्डेक्स टु बुक्स १–वाल्यूम आफ 'शाबराजभाष्य, (ग्रन्थसूची, भाग १, शाबरभाष्यखण्ड) लेखक—गङ्गानाथझा ।

३. स्टडीज इन हिन्दू ला एण्ड इट्स सोर्सेज (१. हिन्दू-विधिशास्त्र का अध्ययन एवं उसके स्रोत), लेखक—म० म० प० गोपीनाथ कविराज ।

४ ए न्यू भक्तिसूत्र (नवीन भक्ति सूत्र), लेखक म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।

५. दि सिस्टम् आफ चक्राज एकार्डिङ्ग टु गोरक्षनाथ (गोरक्षनाथ के अनुसार चक्रों की परम्परा) लेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त है ।

६. थीइज्म इन एन्सियेण्ट इण्डिया (प्राचीन भारत में आस्तिकवाद), लेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।

७. हिन्दू पोइटिक्स (हिन्दू काव्यशास्त्र) लेखक—प्रो० बटुकनाथशर्मा।

८. ए सेवेंटिन्थ सेन्चुरी एस्ट्रोलेब (सत्रहवीं शताब्दी का एस्ट्रोलेब) लेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज।

९. सम आस्पेक्ट्स आफ वीरशैव फिलासफी (वीरशैव दर्शन के कुछ पक्ष) लेखक—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

१०. न्यायकुसुमाञ्जलि (अंग्रेजी अनुवाद), अनुवादक—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

११. दि डेफिनिशन आफ पोयट्री (कविता की परिभाषा) लेखक—नारायणशास्त्री खिस्ते।

१२. खण्डल उपाध्याय, लेखक—म० म० प० गोपीनाथ कविराज।

*३. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग ३।

आकार डिमाई पृष्ठ २०४

प्रस्तुत खण्ड में निम्नलिखित ६ लेखों का संग्रह है।

१. इन्डेक्स टु सावराज भाष्य (शाबरभाष्य की सूची) ले०—स्वर्गीय काल जी० ए० जैकॉब।

२. स्टडीज न हिन्दू ला (२. हिन्दू-विधिशास्त्र का अध्ययन) ले०—गङ्गानाथझा।

३. थीइज्म इन एन्सियेण्ट इण्डिया (प्राचीन भारत में आस्तिकवाद) ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

४. हिस्ट्री एण्ड बिब्लोग्राफी आफ न्यायवैशेषिक लिटरेचर (न्यायवैशेषिक साहित्य का इतिहास एवं ग्रन्थ सूची), लेखक—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

५. नैषध एण्ड श्रीहर्ष (नैषध एवं श्रीहर्ष) लेखक—नीलकमल-भट्टाचार्य ।

६. इण्डियन ड्रामेटर्जी (भारतीय नाट्यकला) लेखक—पी० यन्० पटङ्कर, एम्० ए० ।

*४. सरस्वतीभवन स्टडीज भाग ४ ।

आकार डिमाई पृष्ठ २०४

प्रस्तुत खण्ड में ९ लेख सङ्कलित हैं ।

१. स्टडीज इन हिन्दू ला कम जुडिशियल प्रोसीजर (३. हिन्दू-विधि शास्त्र का अध्ययन, व्यवहार-सम्बन्धी) ले०—गङ्गानाथझा ।

२. हिस्ट्री एण्ड बिब्लोग्राफी आफ न्याय वैशेषिक लिट्रेचर (न्याय वैशेषिक साहित्य का इतिहास एवं ग्रन्थ सूची) लेखक—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

३. एनलीसिस आफ दि कण्टेण्ट्स आफ दि ऋग्वेदप्रातिशाख्य (ऋग्वेदप्रातिशाख्य की विषयसूची का विश्लेषण) लेखक—डॉ० मङ्गलदेवशास्त्री ।

४. गणितकौमुदी आफ नारायणपण्डित (नारायणपण्डित की गणितकौमुदी), लेखक—पद्माकरद्विवेदी ।

५. फूड एण्ड ड्रिंक इन दि रामायणिक एज (रामायणयुग में भोज्य एवं पेय), लेखक—मन्मथनाथराय ।

६. दि प्राब्लेम आफ कैजुएलटी: सांख्ययोग व्यू (आकस्मिकता की समस्या : सांख्ययोग की दृष्टि) लेखक—म० म० पं० गोपीनाथकविराज ।

७. डिसिप्लिन वाई कन्सीक्वेंसेज इन एन्सिएण्ट इण्डिया ले०—जी० एल० सिनहा ।

८. हिस्ट्री आफ ओरिजिन एण्ड एक्सपेन्सन आफ दि आर्यन्स (१) द्यौ एण्ड पृथिवी । (आर्यों के विस्तार एवं मूलस्रोत का इतिहास (१) द्यौ एवं पृथिवी), लेखक—अतुलचन्द्रगांगुली ।

---

*ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

९. पनिसमैण्ट इन एनसिएन्ट इण्डियन स्कूल्स (प्राचीन भारतीय विद्यालयों में दण्ड), ले०—जी० एल० सिनहा।

५. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग ५।

आकार डिमाई, पृ. १९५, (१९२६ ई०)। ५.००

इसमें निम्नलिखित ७ लेखों का संग्रह है—

१. एन्सियण्ट होम आफ दि आर्यन्स एण्ड देयर माइग्रेशन टु इण्डिया (आर्यों का आदि देश तथा भारत में उनका आगमन), लेखक—अतुलचन्द्रगांगुली।

२. ए सत्रप क्वायन (सत्रप सिक्का), ले०—श्यामलालमेहर।

३. एन एस्टीमेट आफ दि सिविलाइजेशन आफ दि बनारस ऐज् डिपिक्टेड इन दि रामायण (रामायण में अभिव्यक्त बनारस की संस्कृति का मूल्यांकन), लेखक—मन्मथनाथराय।

४. ए कम्परीजन आफ दि कन्टेन्ट्स आफ दि ऋग्वेद, वाजसनेयी, तैत्तिरीय एण्ड अथर्ववेद (चतुरध्यायिका) प्रातिशाख्याज् (ऋग्वेदविषयानुक्रमणी की तुलना : वाजसनेयी, तैत्तिरीय और अथर्ववेद (चतुरध्यायिका) का प्रातिशाख्य ले०—डॉ० मङ्गलदेवशास्त्री।

५. डाक्ट्रिन आफ फार्मल ट्रेनिङ्ग एण्ड दि एन्सिएन्ट इण्डियन थाट् ले०—जी० एल० सिनहा।

६. हिस्ट्री एण्ड बिब्लोग्राफी आफ न्यायवैशेषिक लिटरेचर (न्याय-वैशेषिक वाङ्मय का इतिहास तथा विषयपरिचय-सूची), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

७. नोट्स एण्ड क्वेरीज् (टिप्पणी तथा परीक्षण), ले०—म० म० गोपीनाथकविराज।

६. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग ६।

आकार डिमाई, पृ० १९८, (१९२७ ई०) ५.००

इसमें निम्नलिखित ६ लेख हैं।

१. इन्डेक्स टू शाबराज् भाष्य (शाबरभाष्य की सूची) ले०—कोल० जी० ए० जैकाब

२. सम आस्पेक्टस् आफ दि हिस्ट्री एण्ड डाक्ट्रिन्स आफ दि नाथाज् (नाथों के इतिहास एवं सिद्धान्तों के कुछ पक्ष), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

३. एन इन्डेक्स टु दि रामायण (रामायण की सूची, ले०—मन्मथनाथराय।

४. स्टडीज इन हिन्दू लॉ (४. हिन्दूविधिशास्त्र का अध्ययन) ले०-गंगानाथझा।

५. दि मीमांसा मेन्युस्क्रिप्ट्स् इन दि गवर्नमेण्ट संस्कृत लाइब्रेरी, बनारस (राजकीय संस्कृत पुस्तकालय, बनारस में मीमांसा ग्रन्थों के हस्तलेख) लें० म० म० प० गोपीनाथकविराज।

६. नोट्स एण्ड क्वेरीज (टिप्पणी तथा परीक्षण), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

७. सरस्वतीभवन, स्टडीज भाग ७।

आकार डिमाई, पु० १९८, (१९२९ ई०) ५.००

इसमें निम्नलिखित ११ लेखों का संग्रह है—

१. भामह एण्ड हिज काव्यालंकार (भामह और उनका काव्यालंकार), ले०—प्रो० बटुकनाथशर्मा तथा आचार्य बलदेवोपाध्याय।

२. सम वेरीयण्ट्स इन दि रीडिंग्स आफ दि वैशेषिक सूत्राज् (वैशेषिकसूत्रों के कुछ पाठभेद), ले०—म० म० प० गोपीनाथ-कविराज।

३. हिस्ट्री एण्ड बिब्लोग्राफी आफ न्याय वैशेषिक लिटरेचर (न्यायवैशेषिक वाङ्मय का इतिहास तथा विषय-सूची), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज।

४. ऐन अटेम्ट टु एराइव ऐट दि करेक्ट मीनिंग आफ सम आब्स-क्योर वैदिक वर्ड्स। (कुछ अस्पष्ट वैदिक शब्दों के समुचित अर्थज्ञान का एक प्रयास), ले०—सीतारामजोषी।

५. ए कम्परीजन आफ दि कन्टेन्ट्स आफ दि ऋग्वेद, वाजसनेयी, तैत्तिरीय एण्ड अथर्ववेद (चतुरध्यायिका) प्रातिशाख्यादि (ऋग्वेद, वाजसनेयी, तैत्तिरीय तथा

अथर्ववेद प्रातिशाख्यों के विषयों की तुलना), ले०—डॉ० मंगलदेवशास्त्री ।

६. एन इण्डेक्स टु दि रामायण (रामायण की सूची), ले०—मन्मथनाथराय ।

७. एन इण्डेक्स टु शाबराज भाष्य (शाबरभाष्य की सूची), ले०—कोल० जे० ए० जैकव ।

८. ग्लीनिंग्स फ्रोम दि तन्त्राज् (तन्त्रों से चमत्कार), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

९. दि डेट आफ मधुसूदन सरस्वती (मधुसूदनसरस्वती का तिथि-विवेचन), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

१०. डिस्क्रिप्टिव नोट्स् आन संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट (संस्कृतहस्तलेख पर विशेष टिप्पणी), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

११. ए नोट आन दि मीनिंग आफ दि टर्म 'परार्ध' (परार्ध-शब्दार्थ-विचार), ले०—डॉ० उमेशमिश्र ।

८. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग ८ ।
आकार डिमाई, पृ० २२१, (१९३० ई०) ५.००
इसमें निम्नलिखित ६ लेखों का संग्रह है—

१. इण्डियन फिलासफी: ए रिव्यू (भारतीयदर्शन एक समालोचना), ले०—तारकनाथसान्याल ।

२. एन इण्डेक्स टु दि प्रापर नेम्स आकरिंग इन वाल्मिकीज़ रामायण (वाल्मीकिरामायण के मुख्य नामों की सूची), ले०—मन्मथनाथराय ।

३. एन इण्डेक्स टु दि शाबरभाष्य (शाबरभाष्य की सूची), ले०—कोल० जी० ए० जैकब ।

४. हरिस्वामी:—दि कमेण्टेटर आफ दि शतपथ ब्राह्मण एण्ड दि डेट आफ स्कन्दस्वामी—दि कमेण्टेटर आफ दी ऋग्वेद (शतपथब्राह्मण के टीकाकार हरिस्वामी और ऋग्वेद के टीकाकार स्कन्दस्वामी का समय), ले०—डॉ० मंगलदेव-शास्त्री ।

५. मिस्टिसिज्म इन वेद (वेदों में रहस्यवाद), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

६. दि देवदासीज् : ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ दि इन्स्टीच्यूशन (देवदासीप्रथा का इतिहास), ले०—मन्मथनाथराय ।

९. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग ६ ।

आकार डिमाई, पृ० १९२, (१९३४ ई०) ५.००

इसमें निम्नलिखित ४ लेखों का संग्रह है ।

१. दि लाइफ आफ योगिन् (योगी का जीवन), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

२. आन दि ऐण्टीक्विटी आफ दि इण्डियन आर्ट कैनन्स । लें०—हरिदासमित्र ।

३. प्राच्य वर्गीकरण पद्धतिः ले०—सतीशचन्द्रगुप्त ।

४. एन इण्डेक्स टु दि रामायण (रामायण की सूची), ले०—मन्मथनाथराय ।

१०. सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग १० ।

आकार डिमाई, पृ० १९२, (१९३८ ई०) ५.००

इसमें निम्नलिखित १२ लेखों का संग्रह है—

१. दि कन्सेप्शन आफ फिजिकल एण्ड सुपर फिजिकल अर्गनिज्म इन संस्कृत लिटरेचर (संस्कृतसाहित्य में कुछ भौतिक एवं अतिभौतिक सङ्घों की अवधारणा), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

२. सम आस्पेक्ट्स आफ दि फिलासफी आफ शाक्ततन्त्र (शाक्ततन्त्रदर्शन के कुछ पक्ष). ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

३. ए शार्ट नोट आन तत्त्वसमास (तत्त्वसमास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी), ले०—म० म० प० गोपीनाथकविराज ।

४. हिस्ट्री आफ दि वर्ड ईश्वर ऐण्ड इट्स आइडिया ('ईश्वर' शब्द तथा उसके विचार का इतिहास), ले० डॉ० मंगलदेवशास्त्री ।

५. स्पोर्टस् ऐण्ड गेम्स ऐज् रेफर्ड टु इन संस्कृत लिटरेचर (संस्कृत-साहित्य में खेलों का वर्णन), ले०—प० अनन्त शास्त्री फड़के।

६. आब्जेक्ट आफ आफरिंग्स इन दि श्रौत सेक्रिफाइसेस (श्रौत यज्ञों में बलिदान), ले०—चिन्नस्वामीशास्त्री।

७. एग्रीकलचर इन दि वेदाज (वेदों में कृषि), ले०—यस० यन० झारखण्डी।

८. एन इनक्वाइरी इन टु दि नेचर आफ स्पीच (वाक्तत्वविमर्श), ले०—हाराणचन्द्रभट्टाचार्य।

९. डीटीज् एण्ड आब्जेक्ट्स आफ आफरिंग्स इन दि श्रौत सेक्रीफाइसेस (श्रौतयज्ञों में देवताओं की संज्ञायें और उनके हविष्य), ले०—भगवत्प्रसादमिश्र।

१०. ए कम्परीजन आफ दि ऋग्वेद प्रातिशाख्य विथ दि पाणिनीयन् ग्रामर (पाणिनीय व्याकरण से ऋग्वेद प्रातिशाख्य की तुलना), ले०—डॉ० मंगलदेवशास्त्री।

११. कीर्तिकौमुदी ऐण्ड इट्स आथर (कीर्तिकौमुदी तथा उसके लेखक), ले०—शान्तिमयबनर्जी।

१२. दि शक्तिसूत्र एस्क्राइब्ड टु अगस्त्य।
ले०—डॉ० मंगलदेवशास्त्री।

११. व्याकरणदर्शनभूमिका (व्याकरणदर्शन), श्रीरामाज्ञापाण्डेय द्वारा रचित।

आकार डिमाई, पृ० ३०३, कपड़े की जिल्द (१९५४ ई०) ५.००

ग्रन्थकार ने ग्रन्थ में तीन खण्ड की रचना की है, यह प्रथम खण्ड की भूमिका है। इसमें दर्शन के लिए जिन अंशों की आवश्यकता होती है, उनका व्याकरण-दर्शन की दृष्टि से संचय किया गया है। इसमें स्फोटों का आठ से १६ भेद बनाने का प्रयास द्रष्टव्य है।

१२. व्याकरणदर्शनपीठिका (व्याकरणदर्शन), श्रीरामाज्ञापाण्डेय द्वारा रचित।

आकार डिमाई, पृ० २४२, कपड़े की जिल्द, (१९६५ ई०) ४.००

इस भाग में वर्णों का स्वरूप, उत्पत्ति, शब्दस्वरूप, अयोगवाह, उच्चारणप्रक्रिया आदि का विशद विवेचन है।

१३. ग्रहगणितमीमांसा—शोधप्रबन्ध (ज्योतिष) डॉ० मुरारीलाल शर्मा द्वारा रचित।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० १५२, (१९६५ ई०) ५-५०

इसमें ग्रहों की गति का समुचित विवेचन किया गया है। पञ्चाङ्ग-कारों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन मतों की प्रामाणिक समालोचना है। उत्तर-प्रदेशीय शासन द्वारा गङ्गानाथझा पुरस्कार दिया गया है।

१४. पाणिनीयधातुपाठसमीक्षा—शोधप्रबन्ध (व्याकरण) डॉ० भागीरथ-प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' द्वारा विरचित।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ७८६ (१९६५ ई०) १८.५०

पाणिनीयधातुपाठ में पठित सवा दो हजार धातुओं में केवल नौ सौ धातु ही प्रामाणिक हैं ऐसा विलियम् ड्वाइट ह्विटनी का मत है। उसका निराकरण करके भारोपीय, भारेनीय, भारतीय—संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी प्रभृति भाषाओं के प्रयोगों का निदर्शन ग्रन्थ की विशेषता है। पाणिनीय और अपाणिनीय धातुओं, धात्वर्थों का उल्लेख भी किया गया है। धातुरचना का प्रकार और उनके विश्लेषण के लिये धातुध्वनियों की भी तुलना की गई है। ग्रन्थ उत्तरप्रदेशीय शासन द्वारा संस्कृत के सर्वोच्च कालिदास पुरस्कार से सम्मानित है।

१५. सूर्यग्रहणम्—शोधप्रबन्ध (ज्योतिष) डॉ० कृष्णचन्द्र द्विवेदीकृत।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २२२ (१९६७ ई०) १२.००

यद्यपि प्राचीन आचार्यों की ऐसी कोई पद्धति नहीं है जिससे भूमण्डलीय सूर्यग्रहण का विचार किया जा सके; तथापि प्राचीन उपकरणों से सूर्यग्रहण बनाने की प्रक्रिया का विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है। साथ ही वेसल, नेपियर, रावटंवाल की पद्धतियों का सम्यक् विचार किया गया है। पञ्चाङ्गकर्ताओं के लिए ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। गङ्गानाथ झा पुरस्कार से सम्मानित है।

१६. प्रक्रियाकौमुदीविमर्शः--शोधप्रबन्ध (व्याकरण) डॉ० आद्याप्रसाद-मिश्र कृत ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ १५६ (१९६६ ई०) ८.००
इसमें प्रक्रियाकौमुदी पर गम्भीर विवेचन किया गया है। गङ्गानाथ-झा पुरस्कार से सभाजित है।

१७. अथर्ववेदे शान्तिपुष्टिकर्माणि—शोधप्रबन्ध (वेद) डॉ० मायामालवीया द्वारा रचित ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ १९६, (१९६७ ई०) ८.००
इसमें सिद्ध किया गया है कि अथर्ववेद में केवल आभिचारिक कर्म ही नहीं, शान्तिपुष्टिकर्मों का भी विस्तृत विवेचन है, जो समान-रूप से सब वेदों में प्रतिपादित हैं। इस सिद्धान्त के पक्ष और प्रति-पक्ष में भारतीय तथा वैदेशिक विचारकों के मतों की शास्त्रीय समीक्षा की गई है।

१८. श्राद्धकल्पः—प्रबन्ध (धर्मशास्त्र) श्रीदत्तोपाध्याय कृत ।
सम्पादक—डॉ० अशोकचटर्जी शास्त्री ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २४० (१९७१ ई०) १९.००
यह मैथिलों के सम्प्रदाय का ग्रन्थ है, इस पर सम्पादक की समीक्षा उनकी विद्वत्ता और कर्मठता की परिचायक है।

१९. प्राच्यभारतीयम् ऋतुविज्ञानम्—शोधप्रबन्ध (ज्यौतिष) डॉ० धुनीराम त्रिपाठी द्वारा विरचित ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २७० (१९७१ ई०) १८.००
इसमें ज्योतिषशास्त्र तथा संस्कृतभाषा के अनेक ग्रन्थों में उद्धृत ऋतु विज्ञान सम्बन्धी वचनों का तथा लोकभाषा में प्रसिद्ध घाघ और भड्डर की लोकोक्तियों का आधुनिक विज्ञान के साथ तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

२०. पाणिनीयव्याकरणे प्रमाणसमीक्षा—शोधप्रबन्ध (व्याकरण) डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी द्वारा विरचित ।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ४७६ (१९७२ ई०) २६.२५
बिना प्रमाण के किसी भी प्रमेय की सिद्धि नहीं होती—इसी

आधार पर पाणिनीय व्याकरण में भी प्रमेयसिद्धि के लिये प्रमाणों की नितान्त आवश्यकता होने के कारण यह ग्रन्थ रचा गया। जिस प्रकार न्याय-वेदान्तादि दर्शनों में पद-पद पर प्रमाणों की समीक्षा की गई है, उसी प्रकार मुनित्रय के आधार पर इस व्याकरणदर्शन में भी प्रमाणों की समीक्षापूर्ति इस ग्रन्थ से हुई है। अपने अंश में यह नितान्त अपूर्व और मौलिक ग्रन्थ है। इसमें ३ समीक्षाएँ हैं। समीक्षाओं में कुल १५ पुष्प हैं।

२१. व्याकरणदर्शनप्रतिमा—(व्याकरणदर्शन) श्रीरामाज्ञापाण्डेय द्वारा विरचित।

आकार डिमाई मुद्र्यमाण

२२. अग्निनिर्वचनम् (कोश) म० म० मथुरानाथदीक्षितकृत।

आकार डिमाई पृष्ठ ६६ (१८८४ तमे शकाब्दे) १.५०

प्रस्तावित संस्कृतवाङ्मयविश्वकोश में यह प्रथम का निर्वचन है। इसमें अग्नि के सम्बन्धमें संस्कृतसाहित्य में यावदुपलब्ध सामग्री का संग्रह है।

२३. सारस्वतालोकः (इतिहास) नन्दकिशोरशर्मकृत (परिशिष्टम्)। सम्पादक—श्रीगोपीनाथकविराज।

आकार डिमाई पृष्ठ ८० (१९३२ ई०) १.२५

इसमें भारवि के काव्य तथा उसके टीकाकारों का परिचय है। भारवि पर कितने विद्वानों ने लेखनी चलाई है, इससे यह पता चलता है।

२४. कातन्त्रव्याकरणविमर्शः (शोधप्रबन्ध-व्याकरण) लेखक— डॉ० जानकीप्रसाद द्विवेदी।

आकार—रायल (पृष्ठ ३७६) ४०.००
कपड़े की जिल्द (१९७५ ई०)

—o:*:o—

गङ्गानाथझा-ग्रन्थमाला

*१. प्रशस्तपादभाष्यम्—[द्वितीय संस्करण] न्यायकन्दलीटीकायुतम्
(वैशेषिकदर्शन) ।
सम्पादक—श्रीदुर्गाधरझा । मुद्रित
आकार रायल
प्रशस्तपादाचार्य द्वारा प्रणीत, यह वैशेषिकशास्त्र का स्वतन्त्र ग्रन्थ है । यद्यपि इसकी अनेक टीकाएँ हैं, फिर भी अधिक बोधगम्य होने के कारण श्रीधरकृत 'न्यायकन्दली' टीका का ही समावेश किया गया है । सम्पादक द्वारा लिखित इसकी हिन्दी व्याख्या अत्यन्त उपयोगी है ।

२. न्यायसिद्धाञ्जनम्—(वेदान्त) वेदान्तदेशिककृत । नीलमेघाचार्यकृत भाषानुवाद से युक्त ।
आकार रायल पृष्ठ ७३०, कपड़े की जिल्द (१९६७) २५.००
यह रामानुजवेदान्तदर्शन के वडकलै-सम्प्रदाय का प्रसिद्ध ग्रन्थ है । इसमें ६ परिच्छेद हैं—१ जडद्रव्य, २ जीव, ३ ईश्वर, ४ नित्य-विभूति, ५ बुद्धि, ६ अद्रव्य का विवेचन । हिन्दीभाषा में ग्रन्थ का अभिप्राय स्पष्ट किया गया है ।

३. भक्तिरत्नावली—(भक्तिशास्त्र) विष्णुपुरी द्वारा संगृहीत स्वोपज्ञटीका से युक्त । सम्पादक एवं भाषानुवादक—डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द पृष्ठ २०८, (१९६८ ई०) १५.००
श्रीमद्भागवतपुराण के भक्तिप्रतिपादक श्लोकों के संग्रह से १३ अध्यायों में यह ग्रन्थ लिखा गया है । इसके प्रथम अध्याय में भक्ति-निरूपण, द्वितीय में भक्तिहेतु-निरूपण, तृतीय में भक्तिभेद-निरूपण । चतुर्थ से बारह तक नवधा भक्ति के भेदों का निरूपण

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

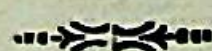
है। तेरहवें अध्याय में शरणागति का निरूपण है। भक्ति के सम्बन्ध में यह ग्रन्थ प्रामाणिक तथा उपयोगी है। साथ ही सम्पादक की भूमिका पाठकों के लिये अत्यन्त ही उपयोगी है।

४. विष्णुधर्मोत्तरपुराणम्—शिल्पशास्त्र (चित्रसूत्र) सम्पादक—डॉ० अशोक चटर्जी शास्त्री।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ६४ (१९७१ ई०) ७.२५
इस ग्रन्थ में चित्रनिर्माण-प्रक्रिया का विधिवत् विवेचन है।

५. विंशतिकाविज्ञप्तिमात्रतासिद्धिद्वयम्—(बौद्धदर्शन) आचार्यवसुवन्धु-द्वारा प्रणीत। व्याख्याकार अनुवादक और सम्पादक—थुवतनछोग-डुब्शास्त्री तथा पं० रामशंकरत्रिपाठी।
साइज रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ६५५ (१९७२) ई० ३६.२५
इसमें 'विंशतिका' स्वोपज्ञवृत्तियुत, 'त्रिंशिका' स्थिरमतिकृत भाष्यसहित तथा दोनों गूढार्थदीपनी व्याख्यानुवादसहित। साथ ही १२५ पृ० की भूमिका है, जिसमें बौद्धविज्ञानवाद के मूल तत्त्वों का विश्लेषण किया गया है।

६. न्यायकुसुमाञ्जलिः (न्याय) श्रीउदयनाचार्य द्वारा विरचित। भाषानुवादक एवं सम्पादक—श्रीदुर्गाधरझा।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द पृ० ६०० (१९७३ ई०) ५६.५०
ईश्वर की सत्ता न मानने वालों के पक्षों का उनके तर्कों और युक्तियों से खण्डन करके ईश्वर की सत्ता सिद्ध की गई है। इसकी हिन्दी व्याख्या ग्रन्थ समझने में बड़ी सहायक है।

७. बौद्ध साधना का विकास। पृष्ठ ७४, (१९७१ ई०) १.७५



गङ्गानाथझा-प्रवचनमाला

*१. वेदविज्ञानबिन्दुः—(वेद) म० म० पं० गिरधरशर्मा चतुर्वेदी द्वारा विरचित ।

आकार रायल　　　　　　　　पृष्ठ ५६

विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर किये गये तीन प्रवचनों का संग्रह है । जिसमें विद्वान् वक्ता ने १–वेदों का स्वरूप, २–वैदिक देवता और ऋषि तथा ३–यज्ञ, इन तीन विषयों पर अपना गम्भीर विचार प्रस्तुत किया है ।

२. बौद्धदर्शनबिन्दुः—(बौद्धदर्शन) डॉ० सातकडिमुखोपाध्याय द्वारा विरचित ।

आकार रायल,　　　　　　　　पृ० ५४

यह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर प्रदत्त तीन भाषणों का संग्रह है। इसमें १. शून्यवाद, २. विज्ञानवाद तथा ३. बौद्धन्याय पर विद्वान् वक्ता ने गम्भीर विचार प्रस्तुत किया है ।

*३. शैवदर्शनबिन्दुः—(शैवदर्शन) डॉ० कान्तिचन्द्रपाण्डेय द्वारा विरचित परिवर्धितसंस्करण ।

आकार रायल　　　　　　　　पृष्ठ २६२

यह तान्त्रिक-प्रमेयबहुल प्रामाणिक ग्रन्थ है । सप्तम दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर प्रदत्त तीन प्रवचनों के संग्रह रूप में सं० २०२१ वि० में प्रकाशित लघुग्रन्थ के समाप्त हो जानेपर उसकी लोकप्रियता को देखते हुए उसका परिबृंहित रूप पुनः प्रकाशित हुआ ।

४. अद्वैतवेदान्तबिन्दुः—(अद्वैतवेदान्त) म० म० पं० अनन्तकृष्णशास्त्री द्वारा लिखित ।

आकार रायल　　　　　　　　पृष्ठ ९८

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

यह अद्वैतवेदान्तदर्शन का एक सारभूत ग्रन्थ है। इसमें विश्वविद्यालय के सप्तमस्थापना-दिवस के अवसर पर दिये गये विद्वान् वक्ता के तीव प्रवचनों को प्रकाशित किया गया है।

*५. न्यायदर्शनबिन्दुः (न्यायदर्शन) म० म० पं० कालीपदतर्काचार्य द्वारा विरचित।
आकार रायल पृष्ठ ७८
यह गङ्गानाथझा-प्रवचनमाला के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के सप्तम दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर न्यायदर्शन के ऊपर दिये गये तीन व्याख्यानों का संग्रह है। इसमें वक्ता ने १. नव्यन्याय के पारिभाषिक पदार्थ, २. न्याय और वैशेषिकदर्शनों का पृथक् दर्शनस्वरूप, ३. प्राचीन व नव्यन्याय का सैद्धान्तिक पार्थक्य आदि विषयों पर विचार किया है।

*६. शैवदर्शनसङ्ग्रहः (शैवदर्शन) प्रथम संस्करण, डॉ० कान्तिचन्द्र-पाण्डेय विरचित।
आकार रायल पृ० १०४
यह भी तीन विशिष्ट व्याख्यानों का एक संग्रह है। इसमें १. शैवद्वैतदर्शन, २. शैवद्वैताद्वैतदर्शन तथा ३. शैवाद्वैतदर्शन पर विचार किया गया है।

७. रामायणमहाभारतराजनीतिबिन्दुः—(पुराणेतिहास) बदरीनाथ काशीनाथशास्त्री द्वारा रचित।
आकार रायल पृ० ५४ (१९७१ ई०) १.५०
इसमें संक्षेप में रामायण-महाभारतकालीन राजनीति का विवेचन है।

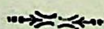
८. व्याकरणदर्शनबिन्दुः—(व्याकरणदर्शन) पं० रघुनाथशर्मा द्वारा रचित।
आकार रायल पृ० १४२ (१९७१ ई०) ३.७५
वाक्यपदीय के आधार पर तीनों काण्डों के विषयों को तीन प्रवचनों में व्यक्त किया गया है। वाक्यपदीय के विषयों के निकटतम ज्ञान के लिये यह अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

९. वेदान्तदर्शनबिन्दुः—(वेदान्तनिबन्ध) श्री एस्० सुब्रह्मण्यशास्त्री द्वारा रचित ।
आकार रायल पृष्ठ ६२ (१९७१ ई०) २.५
इसमें तीन प्रवचनों का संग्रह है—१. उपनिषत्स्वद्वैतवादः २. ब्रह्मसूत्राणामद्वैतानुगुण्यम्, ३. पूर्वमीमांसान्यायानां वेदान्तार्थनिर्णयोपयोगः । परिमार्जित तथा प्रवाहयुक्त भाषा में विषयों का हृदयंगम विवेचन किया गया है ।

१०. राजनीतिदर्शनबिन्दुः—अनन्तश्रीविभूषित-स्वामि श्रीहरिहरानन्दसरस्वती (स्वामी करपात्रीजी) महोदय द्वारा विरचित ।
साइज रायल पृ० २४८ (१९७३ ई०) ३.०
वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालय के दीक्षान्तसमारोह में स्वामीजी ने तीन प्रवचन दिये, जिनका संग्रह प्रस्तुत है । इसमें प्रथम प्रवचन 'पुरुषार्थमीमांसा' है, पुरुषार्थों के प्रतिपादन के साथ मार्क्सदर्शन को पूर्वपक्ष के रूप में प्रतिपादित करके उसका निराकरण किया गया है । इस ग्रन्थ के द्वारा मार्क्सदर्शन तथा उस पर भारतीय दर्शन के प्रभाव का समुचित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

द्वितीय प्रवचन में भागवत में पुरुषार्थ का वर्णन तथा तीसरे में भागवत के अनुसार ईश्वर की सत्ता सिद्ध की गई है । इसमें समस्त दर्शनों के विचारों को प्रस्तुत करते हुए सिद्धान्तपक्ष का विवेचन है ।



सम्पूर्णानन्द-ग्रन्थमाला

१. दृक्सिद्धपञ्चाङ्गनिर्माणपद्धतिः (ज्योतिष) श्रीगणपतिदेवशास्त्री द्वारा रचित एवं सम्पादित ।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द पृ० १६४ (१९६१ ई०) ६.००
पञ्चाङ्गनिर्माण सूर्य सिद्धान्त के अनुसार होता है। इसकी कई सारणियाँ तथा पद्धतियाँ हैं। उनमें तिथिसाधन की प्राचीनपद्धति वर्णित है। इस ग्रन्थ में वेधसिद्ध ग्रहों के साथ तिथि-नक्षत्रादि को भी दृक्प्रत्ययसिद्ध लेने की प्रक्रिया का विवेचन है। संस्कृत भाषा में यह पहला ग्रन्थ है, जिसमें दृक्सिद्धपञ्चाङ्ग निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन है।

२. पाश्चात्यं नीतिशास्त्रम् (राजशास्त्र) श्रीविश्वेश्वरसिद्धान्तशिरोमणि द्वारा रचित ।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ १०४ (१९६३ ई०) ४.००
इस ग्रन्थ में २१ परिच्छेद हैं। इनमें पाश्चात्य विद्वानों के मतों का सुन्दर विवेचन है। ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा गया है। पाश्चात्यराजनीतिदर्शन का यह उत्तम ग्रन्थ है।

३. अर्वाचीनं मनोविज्ञानम् (मनोविज्ञान) मामराजदत्तकपिल द्वारा रचित ।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ४१६, (१९६४ ई०) ११.००
मनोविज्ञानशास्त्र का यह भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया प्रामाणिक ग्रन्थ है। विद्वान् लेखक ने सुन्दर ढंग से आधुनिक विचारधारा को प्राचीन के साथ समन्वित करने का प्रयास किया है।

४. अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम्—(ज्योतिष) श्री रमानाथसहाय द्वारा रचित ।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ३४६. (१९६४ ई०) १३.००
इसमें पाश्चात्य ज्योतिर्विज्ञान का सुन्दर विवेचन है। ग्रन्थ के अन्त में पाश्चात्य ज्योतिर्विदों के नाम तथा ग्रहों की सूची भी संलग्न है।

५. ज्योतिर्विज्ञानम् (ज्योतिष) अर्कसोमयाजीधूलिपाल द्वारा विरचित।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द पृ० २४४, (१९६४ ई०) ६.००
इस ग्रन्थ में पाच्य-पाश्चात्य सिद्धान्तों की तुलना करके आर्ष सिद्धान्त को स्थिर किया गया है। इसके ३ भाग हैं—१. गणित जानने वालों के लिए और १. ३. जो गणित नहीं जानते हैं उन्हें भी सिद्धान्त का परिचय देगा।

६. अभिनवमनोविज्ञानम् (मनोविज्ञान) प्रभुदयाल अग्निहोत्री द्वारा विरचित।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द पृष्ठ २८२, (१९६५ ई०) ६.००
मन के विषय में अध्ययन प्राचीन काल से होता रहा है। पाश्चात्य पद्धति से मन, उसकी क्रिया तथा गुण का अध्ययन इस ग्रन्थ में किया गया है।

७. भारतस्य सांस्कृतिको दिग्विजयः (इतिहास) हरिदत्त वेदालङ्कार द्वारा प्रणीत। अनुवादक और सम्पादक—श्रीकालिकाप्रसाद शुक्ल।
आकार रायल पृ० ३७०, कपड़े की जिल्द (१९६७ ई०) १०.००
इस ग्रन्थ में यह प्रतिपादित है कि भारत ने विश्व के किन-किन भागों में जाकर विजय प्राप्त की और अपनी संस्कृति की छाप छोड़ दी। इसकी सिद्धि में अनेक प्रमाण दिये गये हैं।

८. अनुसन्धानपद्धतिः (कला) डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश-शास्त्री' द्वारा रचित।
आकार रायल पृष्ठ ५८ (१९६९ ई०) ३.००
अनुसन्धाता को अनुसन्धान कैसे करना चाहिए? सार्थक अनुसन्धान क्या है? मौलिक विचारों के आवाहन की क्या प्रक्रिया है? आदि शंकाओं का युक्तियुक्त समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। संस्कृत भाषा में अभी तक इस प्रकार के अन्य ग्रन्थ की रचना नहीं हुई है।

९. भारतीयविचारदर्शनम् [प्रथमो भागः] (राजशास्त्र) श्रीहरिहरनाथ त्रिपाठी द्वारा विरचित।
साइज, रायल कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ५१५, (१९७३ ई०) ४०.००

इस ग्रन्थ में भारतीय राजनीति और उसके अनुसार समाज-व्यवस्था और अर्थव्यवस्था का चित्रण किया गया है। अब तक हिन्दी में या अँग्रेजी में प्रकाशित ग्रन्थों का भारतीय दृष्टिकोण से विचार इसमें संगृहीत है। ग्रन्थ की भाषा संस्कृत है।

—०*०—

(६)

गोपीनाथकविराज-ग्रन्थमाला

१. संस्कारदीपकः (धर्मशास्त्र) श्रीहर्षनाथझा द्वारा विरचित तथा श्रीरामचन्द्र शास्त्री खनङ्ग की टिप्पणी से युक्त।
सम्पादक—श्रीदुर्गाधरझा।
आकार रायल पृष्ठ ३४०, कपड़े की जिल्द (१९६३) ७.००
इस ग्रन्थ में पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार तेरह संस्कारों का विवेचन किया गया है। संस्कारों के ज्ञान के लिए ग्रन्थ उपयोगी है।

—०*०—

(७)

वल्लभवेदान्त-ग्रन्थमाला

१. शुद्धाद्वैतमार्तण्डः (वेदान्त) गोस्वामी गिरिधर द्वारा प्रणीत।
तथा प्रमेयार्णव (वेदान्त) बालकृष्णभट्टकृत।
ब्रह्मवाद (वेदान्त) हरिरायजिद्विरचित।
सम्पादक—श्रीसत्यनारायण मिश्र।
आकार डिमाई पृष्ठ १५०, कपड़े की जिल्द, (१९६६) ५.००
ये तीनों वल्लभवेदान्त के सिद्धान्तप्रतिपादक ग्रन्थ हैं। सम्पादक ने अनेक भाष्यकारों के मतों के साधर्म्य-वैधर्म्य की सूची बनाकर पाठकों का बड़ा उपकार किया है।

—०*०—

पालि-ग्रन्थमाला

१. अभिधम्मत्थसंगहो—१-२ भाग (पालि) आचार्य अनिरुद्ध द्वारा विरचित। सम्पादक एवं भाषानुवादक भदन्त रेवतधम्म तथा श्रीरामशंकरत्रिपाठी।

आकार रायल भाग १ पृष्ठ ५२६, कपड़े की जिल्द	(१९६७)	१५.००
,, ,, २ ,, ७००, ,, ,,	(१९६७)	२०.००

त्रिपिटकों में अभिधम्मपिटक बुद्ध का वचन माना जाता है। यह स्थविरसम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसकी भूमिका और हिन्दीभाषानुवाद से ग्रन्थ का परिचय मिलता है। पालिभाषा न जाननेवालों के लिए भी ग्रन्थ उपयोगी है।

२. जातकट्ठकथा (पालि) श्रीबुद्धघोषाचार्यविरचित।
सम्पादक—पं० लक्ष्मीनारायण तिवारी। मुद्रयिष्यमाण।

३. विसुद्धिमग्गो—भाग १-३ (पालि) आचार्यबुद्धघोष द्वारा विरचित। भदन्तधर्मपालकृत परमार्थमञ्जूषामहाटीका से युक्त।
सम्पादक—डॉ० रेवतधम्म (बर्मी)।

आकार रायल भाग १ पृष्ठ ६४४, कपड़े की जिल्द,	(१९६९)	३६.००
,, ,, २ ५४८, ,, ,,	(१९६९)	३२.००
,, ,, ३ ५१९, ,, ,,	(१९७२)	२७.००

इस ग्रन्थ में तेइस परिच्छेद हैं। ग्रन्थकार की रचनाओं में यह ग्रन्थ मुर्द्धन्य है। टीका के साथ प्रकाशित होने से ग्रन्थ की महिमा बढ़ी है।

४. पालित्तिपिटकसद्दानुक्कमणी (कोष)।

साइज रायल भाग १	पृ० ६५२	मुद्रित
,, ,, २		मुद्रयमाण

यह ग्रन्थ दो भागों में है। प्रथम भाग में पालित्रिपिटकशब्दानुक्रमणी है। द्वितीय भाग में पालित्रिपिटकगाथानुक्रमणी है। पालिसाहित्य में आये हुए शब्दों का चयन है।

—०*०—

(९)

योगतन्त्रग्रन्थमाला

१. नित्याषोडशिकार्णवः—(तन्त्र) शिवानन्दकृत—ऋजुविमर्शिनी टीका और विद्यानन्दकृत—अर्थरत्नावली टीकाओं से युक्त।
सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी।
आकार रायल पृष्ठ ५५४, कपड़े की जिल्द (१९६८ ई०) २५.००
यह ग्रन्थ महात्रिपुरसुन्दरी के आराधकों के लिए उपयोगी है। इसके अन्त में दीपकनाथसिद्धकृत त्रिपुरसुन्दरीदण्डक, शिवानन्दकृत सुभगोदय, सुभगोदयवासना, सौभाग्यहृदयस्तोत्र और अमृतानन्दयोगिकृत सौभाग्यसुधोदय तथा चिद्विलासस्तोत्र भी मूल रूप में संलग्न है। इसपर सम्पादक को सर्वोच्च कालिदास पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

२. लुप्तागमसंग्रहः—भाग १ (तन्त्र) म० म० पं० गोपीनाथ कविराज द्वारा संकलित एवं सम्पादित।
आकार रायल पृष्ठ २४२, कपड़े की जिल्द (१९७०) १२.००
यद्यपि आगमों की परम्परा का लोप होने से अनेक ग्रन्थ लुप्त हैं, तथापि उपलब्धागमग्रन्थों एवं टीकाओं में उद्धृत आगमवचनों के संग्रह का यह प्रथम प्रयास है। इसमें २२१ आगमों के वचनों का संग्रह किया गया है।

३. तन्त्रसंग्रहः—भाग १ (तन्त्र) संपादक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।
आकार रायल पृष्ठ ३३८, कपड़े की जिल्द (१९७०) १६.००
प्रथम भाग में सवृत्तिक विरूपाक्षपञ्चाशिका, सटीक साम्बपञ्चाशिका, व्याख्यासहित त्रिपुरामहिमस्तोत्र, स्पन्दप्रदीपिका, अनुभवसूत्र और वातुलशुद्धाख्यतन्त्र ये ६ तन्त्र संगृहीत हैं।

४. तन्त्रसंग्रहः— भाग २ (तन्त्र)। संपादक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।
आकार रायल पृष्ठ ४६४, कपड़े की जिल्द (१९७०) १७.००

इस द्वितीय भाग में निर्वाणतन्त्र, तोडलतन्त्र, कामधेनुतन्त्र, फेत्कारिणीतन्त्र, ज्ञानसंकलिनीतन्त्र, सवृत्तिका देवीकालोत्तरागम में ६ तन्त्र संगृहीत हैं।

५. महार्थमञ्जरी (तन्त्र) श्रीमहेश्वरानन्द द्वारा प्रणीत। स्वोपज्ञ-परिमलाख्यव्याख्या से युक्त।
सम्पादक—पं० व्रजवल्लभ द्विवेदी।
आकार रायल, पृ० ३०३ कपड़े की जिल्द, (१९७२) १७.५०
शैवदर्शन का यह प्रमुख ग्रन्थ, जिसे क्रमदर्शन भी कहा जाता है मूल कारिकाएँ प्राकृतभाषा में लिखी गई हैं। इसपर महेश्वरानन्द ने मूल कारिकाओं की छाया तथा परिमल नामक व्याख्या संस्कृत में लिखी है। भाषा प्राञ्जल तथा विस्तृत है।

६. तन्त्रसंग्रहः (तन्त्र) सम्पादक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।
आकार रायल मुद्रयमाण
इस तृतीय भाग में गन्धर्वतन्त्र, मुण्डमालतन्त्र, कामाख्यातन्त्र, सनत्कुमारतन्त्र, भूतशुद्धितन्त्र, कङ्कालिनीतन्त्र—इन ६ तन्त्रों का संग्रह है।



लघुग्रन्थमाला

२, ७, ८, १०, ११, १३, १५, १७, १९, २० संख्याङ्कित ग्रन्थ "सारस्वती सुषमा" के विभिन्न अङ्कों में मुद्रित हुए हैं। ये अलग से मुद्रित नहीं हैं।

*१. अष्टादशपुराणव्यवस्था—श्रीकाशीनाथभट्टद्वारा रचित।
सम्पादक—पं० मुरलीधरमिश्र।
आकार रायल पृ० १८ (संवत् २०१५ वि०) ७.००
(वर्ष १३, अङ्क १-४)

२. काण्वसंहिताभाष्यसंग्रहः (वेद) आनन्दबोध भट्टोपाध्याय द्वारा रचित। सम्पादक—डॉ० सुभद्र झा एवं श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी।
आकार रायल पृ० २०४ १४.००
वर्ष ७, अ० १ से ४
,, ८, ,, १ - ४
,, ९, ,, १

३. कोविदानन्दः (अलङ्कारशास्त्र) आशाधरभट्ट द्वारा विरचित स्वोपज्ञकादम्बिनीटीकायुत। सम्पादक—श्रीकालिकाप्रसाद शुक्ल।
आकार रायल पृष्ठ ३२ (संवत् २०१८ वि०) १.५०
(वर्ष १६, अं० ३-४)
इसमें अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना वृत्तियों का १२५ कारिकाओं में विवेचन है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

*४. गलितप्रदीपः (वेद) श्रीलक्ष्मीधरसूरि द्वारा रचित।
सम्पादक—श्रीकृष्णदेव शर्मा।
आकार रायल पृ० ५२ (संवत् २०१६ वि०)
(वर्ष १४, अङ्क ४)

५. गैरिकसूत्राणि (कला) गङ्गारामजी द्वारा रचित। श्रीरघुनाथशर्मा-कृत विवरणसहित।
सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी।
आकार रायल पृष्ठ १६ (संवत् २०१६ वि०) १.००
(वर्ष १२, अ० ३-४)
ग्रन्थों में ध्यानाकर्षण के लिए किन प्रतीकों तथा वाक्यों पर गैरिक रंग लगाना चाहिए यह सूत्रों में प्रतिपादित है। यह अपने ढंग का अद्वितीय ग्रन्थ है।

६. देवीपुष्पाञ्जलिः (स्तोत्र) रामकृष्णकृत। पं० श्रीरामसहाय दीक्षित द्वारा रचित व्याख्या से युक्त।
आकार रायल पृ० २८ (संवत् २०२३ वि०) १.००
(वर्ष २१, अ० २)
दुर्गासप्तशती के आधारपर रची गयी यह स्तुति संस्कृतव्याख्या के साथ मुद्रित है।

७ पञ्चस्कन्धप्रकरणम् (बौद्धदर्शन) आचार्यवसुबन्धु द्वारा विरचित।
सम्पादक—श्रीशान्तिभिक्षुशास्त्री।
आकार रायल पृ० १६ ७.५०
(वर्ष १०, अ० १-४)

८. पथिकजनपातकचिन्तनस्मृतिः (यात्रावर्णन) श्रीमहेशभट्ट विरचित।
सम्पादक —श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी।
आकार रायल पृ० २८ २.००
(वर्ष ७, अङ्क १)

९ पलभागखण्डनम् (ज्योतिष) श्रीदैवज्ञरंगनाथभट्टविरचित।
सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा।
साइज रायल पृ० ८ ४.००
(वर्ष १६, अङ्क १-२)

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

१०. प्रश्नाङ्गिरासूत्रम् पिप्पलादशास्त्रीयम् (वेद) श्रीवासुदेव द्विवेदी द्वारा रचित व्याख्यानसहित।
सम्पादक—डॉ० सुभद्र झा एवं श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी।
आकार रायल पृ० २३ ६.००
(वर्ष ७, अङ्क ३-४)
(,, ८, ,, १)

११. प्रत्याख्यानसंग्रह: (व्याकरण) श्रीनागेशभट्टविरचित।
सम्पादक—श्रीसूर्यनारायणशुक्ल, श्रीअनन्तशास्त्री फडके एवं श्रीदेवदत्तशर्मोपाध्याय।
साइज रायल पृ० ५६ ४.००
(वर्ष २, विशिष्टाङ्क)
(,, ३, ,,)

*१२. प्रमाणविनोद: (नव्यन्याय) श्रीचित्रधर मिश्र द्वारा रचित।
सम्पादक—श्रीढुण्ढिराज शास्त्री।
आकार रायल पृ० ३४ ७.००
वर्ष १३, अङ्क १-४

१३. बीजगणितावतंस: (गणितज्योतिष) श्रीनारायणपण्डित द्वारा रचित।
सम्पादक—श्रीचन्द्रभानुपाण्डेय।
आकार रायल पृ० ४८ ११.५०
(वर्ष ८, अङ्क १-४)
(,, ९, ,, १-२)

*१४. भङ्गीविभङ्गीकरणम् (ज्योतिष) श्रीरङ्गनाथभट्ट द्वारा रचित।
सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा।
आकार रायल पृ० ५६ ७.००
(वर्ष १३, अङ्क ४)

१५. भारोत्थापनयन्त्रनिर्माणविधि: (शिल्पशास्त्र) श्रीदेवीसिंह महीपति द्वारा रचित। सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी, प्राक्कथनलेखक डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल।
आकार रायल पृ० १८ २.००
(वर्ष १२, अङ्क २)

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

१६. लोहगोलखण्डनम् (ज्योतिष) रङ्गनाथरचित ।
लोहगोलसमर्थनम् ,, गदाधररचित ।
सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा ।
आकार रायल पृ० २८ २.००
(वर्ष १६, अङ्क ३-४)
दोनों ग्रन्थ एक साथ मुद्रित हैं। इनमें आकाश के वर्ण के सम्बन्ध में विचार किया गया है।

१७. श्रीरामकर्णामृतम् (खण्डकाव्यम्) श्री ति० मा० नारायण शास्त्री द्वारा रचित। सम्पादक—श्री क० वे० कृष्णमूर्ति।
आकार रायल पृ० ३४ ४.००
(वर्ष ११, अङ्क १-२)

१८. सिंहलताजिकोक्ताः षोडशयोगाः (ज्योतिष)।
प्रश्नसारः
श्रीनृसिंहदैवज्ञविरचित। सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा।
आकार रायल पृ० १६ २.००
(वर्ष १६, अङ्क १)

१९. सिद्धान्तचूडामणिः (सिद्धान्तज्योतिष) श्रीरङ्गनाथभट्ट द्वारा विरचित। सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा।
आकार रायल पृष्ठ १४२
(वर्ष ९, अङ्क १ से ४) २६.००
(,, १०, ,, १ - ४)
(,, ११, ,, १ - २)
(,, १२, ,, १ - ४)

२०. सुवर्णमुक्तासंवादः (लघुकाव्य) श्रीमहेशमनीषी द्वाराविरचित। सम्पादक—श्रीबटुकनाथशास्त्री खिस्ते।
आकार रायल पृष्ठ १२ २.००
(वर्ष ४, अङ्क २)

संस्क्रियमाणग्रन्थः

(१) शिवाद्वैतप्रकाशिका (दर्शनम्) काशीनाथभट्ट विरचिता।

—०*०—

म० म० शिवकुमारशास्त्रि-ग्रन्थमाला

१. परिभाषेन्दुशेखरः (प्रथमपुष्प) [व्याकरण] पं० श्रीयागेश्वर-शास्त्री द्वारा विरचित हैमवती टीका से युक्त । सम्पादक डॉ० कालिकाप्रसाद शुक्ल ।
आकार रायल, पृष्ठ ३६६, कपड़े की जिल्द (१९७५) ४९.००
परिभाषेन्दुशेखर नागेश के पुत्र के रूप में वैयाकरण समाज में मान्य है। इस पर अनेक विद्वानों ने अपनी लेखनी चलाकर अपने को धन्य माना है। यह टीका नवीन होते हुए भी तात्याशास्त्री द्वारा रचित 'भूति' तथा जयदेव मिश्र द्वारा रचित 'विजया' की जननी है।

२. तत्त्वचिन्तामणिः (मङ्गलवादान्त द्वितीयपुष्प). [न्याय] म० म० मथुरानाथ तर्कवागीश विरचित 'तत्त्वचिन्तामणिरहस्य' व्याख्या सहित। सम्पादक—पं० श्रीबदरीनाथशुक्ल। आकार रायल, पृ० ७५, कपड़े की जिल्द (१९७६) १५.००

३. वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा (तृतीय पुष्प) [व्याकरण] नागेशभट्ट विरचित। सम्पादक—डॉ० कालिकाप्रसादशुक्ल। आकार रायल, पृष्ठ ३०३, कपड़े की जिल्द (१९७७) ३६.००

वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा व्याकरणदर्शन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। 'वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा' का प्रकाशन सर्वप्रथम हो रहा है। यह ग्रन्थ सम्प्रति मूलमात्र ही मुद्रित हुआ है, किन्तु सम्पादक की विविध प्रकार की विस्तृत टिप्पणियों ने इस दार्शनिक ग्रन्थ को सुबोध बना दिया है। इसके साथ ही साथ विस्तृत गवेषणापूर्ण तथा समीक्षात्मक भूमिका लिखकर सम्पादक ने व्याकरणदर्शन के ऐतिहासिक विकास की रूपरेखा भी प्रस्तुत की है।



हस्तलिखितग्रन्थों की प्रकाशित विवरणात्मिका सूची

१. विवरणपञ्जिका (प्रथम खण्ड, भाग १) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ४०५ (१९५३ ई०) ३.२५
इस भाग में सरस्वती भवन में संगृहीत वेद और उपनिषद् के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है ।

२. विवरणपञ्जिका (प्रथम खण्ड, भाग २) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २५८, (१९५३ ई०) २.०६
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत उपनिषद् के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । इस भाग के अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है ।

३. विवरणपञ्जिका (द्वितीय खण्ड, भाग १) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३०६, (१९५३ ई०) २.५०
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत कर्मकाण्ड के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है ।

४. विवरणपञ्जिका (द्वि० ख० भाग २) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २२० (१९५३ ई०) २.००
इसमें सरस्वतीभवन में संगृहीत कर्मकाण्ड के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है ।

५. विवरणपञ्जिका (तृतीय खण्ड) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २५६ (१९५६ ई०) ४.३१
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत धर्मशास्त्र के ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है ।

६. विवरणपञ्जिका (चतुर्थ खण्ड) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३२६, (१९५७ ई०) ६.२५
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत पुराणेतिहास और गीता के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है ।

७. विवरणपञ्जिका (पञ्चम खण्ड, भाग १) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३२० (१९५८ ई०) ७.२५
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत स्तोत्रों के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है ।

८. विवरणपञ्जिका (पञ्चम खण्ड, भाग २) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ३१८ (१९५८ ई०) ७.२५
इसमें सरस्वतीभवन में संगृहीत स्तोत्रों के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । इसके अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सुची भी संलग्न है ।

९. विवरणपञ्जिका (षष्ठ खण्ड) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २९८ (१९६० ई०) ६.००
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत तन्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है ।

१०. विवरणपञ्जिका (सप्तम खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३५६ (१९६१ ई०) ७.००

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत सांख्ययोग-पूर्वमीमांसा तथा वेदान्तशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में आकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

११. विवरणपञ्जिका (अष्टम खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ४२६ (१९६२ ई०) ८.५०

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत न्याय-वैशेषिकशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

१२. विवरणपञ्जिका (नवम खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३७४ (१९६३ ई०) ७.५०

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत ज्योतिषशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

१३. विवरणपञ्जिका (दशम खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २६० (१९६४ ई०) ६.००

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत व्याकरणशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

१४. विवरणपञ्जिका (एकादश खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३९४ (१९६४ ई०) ८.५०

इस भाग में सरस्वतीभवनस्थ साहित्यशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

१५. विवरणपञ्जिका (द्वादश खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपररायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३३४, (१९६५ ई०) ८.००

इस भाग में जैन, भक्ति-सम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्प, सङ्गीत, नीति, धनुर्वेद, पञ्जी, प्रशस्ति, चित्र, देशी भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में ग्रन्थों की अकारादिक्रम से सूची भी संलग्न है।

—०✻०—

(१३)

सारस्वती सुषमा

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय की त्रैमासिक अनुसन्धान पत्रिका का प्रकाशन सन् १९४२ ई० से निरन्तर होता आ रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशनारम्भ 'राजकीय संस्कृत महाविद्यालय' के समय में ही हुआ था। तभी से यह अनुसन्धान पत्रिका अविच्छिन्न रूप से अपनी सारस्वत उपलब्धियों के माध्यम से संस्कृत जगत् को अभिनव दृष्टि प्रदान करती हुई आज ३४वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इस गवेषणाप्रधान पत्रिका में संस्कृत वाङ्मय की सभी शाखाओं से सम्बद्ध पाण्डित्यपूर्ण मौलिक निबन्धों का प्रकाशन होता रहा है और हो रहा है।

इस पत्रिका में अनुसन्धानप्रधान निबन्धों का तो प्रकाशन होता ही है साथ ही इस विश्वविद्यालय के विश्वविख्यात 'सरस्वती भवन' ग्रन्थालय में सुरक्षित तत्तद्विषयों की लघु-पाण्डुलिपियों को लघु-ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशन किया जाता है। निःसन्देह वे लघुग्रन्थ 'सारस्वती सुषमा' के माध्यम से संस्कृत प्रेमियों के लिए बहुमूल्य उपहार हैं। इस अनुसन्धान पत्रिका का प्रचार-प्रसार भारतवर्ष में तो है ही—विदेशों में भी इसके पाठकों की संख्या पर्याप्त है।

इस पत्रिका के प्रथम अङ्क से लेकर अद्यावधि प्रकाशित सभी अङ्क उपलब्ध हैं। 'सारस्वती सुषमा' का वार्षिक चन्दा दश रुपये हैं और इसका प्रकाशन वर्ष में चार बार—ज्येष्ठ, भाद्रपद, मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन पूर्णिमा को होता है।

इस विश्वविद्यालय में विशेष अवसरों पर विशिष्ट व्याख्यान-मालाएं आयोजित होती रहती हैं। व्याख्यान के रूप में पठित तत्तत्-शास्त्रों से सम्बद्ध निबन्धों को सारस्वती सुषमा के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित किया जाता है। अधोलिखित विशेषाङ्क अपने आप में तत्तत्-शास्त्रों के सारसंक्षेप हैं तथा संग्रहणीय हैं—

१. दर्शनविशेषाङ्क :— इस अङ्क म सभी आस्तिक दर्शनों पर तत्तत्-दर्शनों के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये गवेषणाप्रधान निबन्धों का संग्रह है। यह विशिष्टाङ्क 'सारस्वती सुषमा' के ग्यारहवें वर्ष के ३-४ अङ्कों के रूप में प्रकाशित है— ४.००

२. दर्शनविशेषाङ्क :—इस विशेषाङ्क में भी विभिन्न भारतीय दर्शनों के उद्भव एवं विकास तथा उनकी वैचारिक उपलब्धियों पर तत्तत्-शास्त्रों के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा लिखे गये अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। यह विशिष्टाङ्क 'सारस्वती सुषमा' के पन्द्रहवें वर्ष के १-४ अङ्कों के रूप में प्रकाशित हुआ है— ७.००

३. दर्शनविशेषाङ्क :—इस विशेषाङ्क में समस्त आस्तिक दर्शनों पर लिखे गये पाण्डित्यपूर्ण निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुछ निबन्ध पाश्चात्य-पौरस्त्य दर्शनों पर तुलनात्मक दृष्टि से भी लिखे गये हैं। इस विशेषाङ्क का प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के सत्तरहवें वर्ष के १-४ अङ्कों के रूप में हुआ है— ७.००

४. तन्त्रविशेषाङ्क :—इस विशेषाङ्क में तन्त्रवाङ्मय के तलस्पर्शी विद्वानों द्वारा लिखे गये निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के बीसवें वर्ष के प्रथमाङ्क के रूप में हुआ है— ७.००

५. पुराणविशेषाङ्क :—इस विशिष्टाङ्क में पुराणसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा लिखे गये अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का संग्रह है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के बीसवें वर्ष के ३-४ अङ्कों के रूप में हुआ है— ४.००

६. वेदान्तदर्शनविशेषाङ्क :—इस विशेषाङ्क में वेदान्तदर्शन के सभी सम्प्रदायों की दार्शनिक विवेचना से सम्बद्ध शोधपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। विशेषाङ्क सङ्ग्रहणीय है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के इक्कीसवें वर्ष के ३-४ अङ्कों के रूप में हुआ है— ५.००

७. बौद्धजैनशैवदर्शनविशेषाङ्क :—इस विशेषाङ्क में बौद्ध-जैन तथा शाक्तदर्शनों पर ख्यातिलब्ध विद्वानों द्वारा लिखित गवेषणापूर्ण निबन्ध प्रकाशित हुए हैं। इस विशिष्टाङ्क का प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के चौदहवें वर्ष के चतुर्थ अङ्क के रूप में हुआ है— ४.००

८. व्याकरणदर्शनविशेषाङ्क :—इस विशेषाङ्क में व्याकरणशास्त्र के विविध पक्षों पर निष्णात विद्वानों द्वारा लिखित शास्त्रचिन्तनपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के तेरहवें वर्ष के १–४ अङ्कों के रूप में हुआ है— ७.००

९. रजतजयन्तीविशेषाङ्क :—'सारस्वती सुषमा' का छब्बीसवें वर्ष का ३–४ अङ्क 'रजतजयन्तीविशिष्टाङ्क' के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस अङ्क में प्रकाशित सभी निबन्ध पाडित्यपूर्ण हैं। इस विशेषाङ्क की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि 'सारस्वती सुषमा' में प्रथम वर्ष से लेकर पन्द्रहवें वर्ष तक प्रकाशित निबन्धों तथा उनके लेखकों की सूची परिशिष्टरूप में प्रकाशित की गयी है— ९.००

नोट :—'सारस्वती सुषमा' के पुराने अङ्कों पर सार्वजनिक पुस्तकालयों, संस्कृत पाठशालाओं, विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों एवं विश्वविद्यालयों के विभागीय पुस्तकालयों, महाविद्यालयों (डिग्री-कालेजों) तथा पुस्तक-विक्रेताओं को २५ प्रतिशत कमीशन प्रदान किया जाता है।



❋ कुछ आवश्यक सूचनाएँ ❋

१. विश्वविद्यालय के प्रकाशन वास्तविक पुस्तक-विक्रेताओं को २५ प्रतिशत के हिसाब से कमीशन काटकर बेचे जाएँगें।

२. विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय तथा पाठशालाओं के ग्रन्थालयों को भी २५% की छूट प्राप्त है।

३. पाँच से अधिक पुस्तकें क्रय करने पर राजकीय संस्थाओं को भी २५% के हिसाब से कमीशन दिया जायेगा।

४. विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय तथा पाठशालाओं के वास्तविक अध्यापकों को एक प्रति क्रय करने पर १२½ (साढ़े बारह रुपए) सैकड़े के हिसाब से कमीशन काटकर पुस्तकें बेची जायँगी।

५. विश्वविद्यालय अपने अधीनस्थ वास्तविक विश्वविद्यालयीय अध्यापकों, विभागाध्यक्षों तथा छात्रों को प्रकाशनों की एक प्रति क्रय करने पर ५०% की छूट देता है।

६. अन्य क्रेताओं को पूर्ण मूल्य देना होगा।

७. 'सारस्वती सुषमा' अनुसन्धान पत्रिका के लिए भी २५% कमीशन दिया जाएगा।

८. पैकिंग, डाक तथा रेलवे का खर्च क्रेता को स्वयं वहन करना पड़ेगा।

९. पुस्तकें रजिस्टर्ड-पैकेट अथवा रेलवे-पार्सल से भेजी जाती हैं। रेलवे-पार्सल से पुस्तकें क्रय करनेवाले क्रेताओं को अपने निकटस्थ रेलवे-स्टेशन का उल्लेख स्पष्ट करना आवश्यक है, जिससे पार्सल भेजने में कठिनाई न हो।

१०. पुस्तकों का पूर्ण मूल्य, डाक-व्यय सहित अग्रिम प्राप्त होने पर ही पुस्तकें भेजी जाती हैं.। एतदर्थ पत्राचार द्वारा मूल्य एवं डाक-व्यय के बारे में जानकारी प्राप्त कर लें।

११. वी० पी० पी० नहीं भेजी जाती।

१२. प्रकाशनों का वांछनीय मूल्य इण्डियन पोस्टल आर्डर अथवा क्रास्ड बैंकड्राफ्ट द्वारा अग्रिम आना अपेक्षित है। इण्डियन पोस्टलआर्डर अथवा बैंकड्राफ्ट, जिसका भुगतान वाराणसी में हो सके, 'सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय

वाराणसी' के नाम देय होना चाहिए और रजिस्ट्री द्वारा उसे इस विश्वविद्यालय के 'विक्रय-व्यवस्थापक' के पते पर पहुँचना चाहिए। धनादेश (मनीआर्डर) स्वीकार्य नहीं होगा।

१३. प्रकाशनों के क्रय के संबन्ध में किसी भी प्रकार का पत्राचार 'विक्रय-व्यवस्थापक, सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी' के पते पर करें।

१४. आर्डर की जो प्रतियाँ न भेजी जाएँ, तो समझना चाहिए कि पुस्तक प्राप्य नहीं है, या छप रही है। यह विश्वविद्यालय अपनी ही प्रकाशन बेचता है।

१५. पुस्तकों का आर्डर देते समय पुस्तकों का नाम, उसकी सीरीज संख्या तथा क्रय की संख्या साफ-साफ लिखें, यदि कहीं काट-पीट करें, तो वहाँ हस्ताक्षर अवश्य कर दें।

१६. पुस्तकें अच्छी तरह बाँधकर सावधानी पूर्वक भेजी जाती हैं। यदि मार्ग में कहीं पैकिंग टूट जाय और पुस्तकें क्षतिग्रस्त हो जाएँ, तो उसका उत्तरदायित्व विश्वविद्यालय पर नहीं होगा। पुस्तकें अति सावधानी से, अच्छी पैकिंग के अनन्तर ही भेजी जाती हैं।

१७. विश्वविद्यालय के प्रकाशन प्रतिष्ठित पुस्तक-विक्रेताओं, विश्वविद्यालयों, डिग्री-कालेजों, संस्कृत पाठशालाओं के पुस्तकालयों एवं राजकीय पुस्तकालयों को बिलपर भी बेचे जाते हैं।

---०*०---

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय के अभिनव प्रकाशन

१. शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता—[उत्तरविंशतिः] सायणभाष्य सहित। सम्पादक—श्रीचिन्तामणि मिश्र। .. २२-००

२. भारतीयविचारदर्शनम्—[भाग-२] लेखक एवं सम्पादक—डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी— १०५-६०

३. सिद्धान्तसार्वभौमः—[भाग-३] आचार्यमुनीश्वर विरचित; सम्पादक-स्व० मीठालाल ओझा— ३२-२०

४. उकरा—[अरबिकज्यौतिषशास्त्र] साव्यूसजूस विरचित; सम्पादक—श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य— ३९-००

५. बौधायनशुल्बसूत्रम्—श्रीव्येंकटेश्वर विरचित 'बौधायनशुल्बमीमांसा' एवं श्रीद्वारकानाथयज्व विरचित 'बौधायनशुल्बसूत्रव्याख्यान' नामक टीकाओं से विभूषित। सम्पादक—श्रीविभूतिभूषण-भट्टाचार्य— ....

६. योगिनीहृदयम्—[तृतीय संस्करण] अम्बिकानन्दयोगी विरचित 'दीपिका' एवं भास्करराय विरचित 'सेतुबन्ध' टीकाओं से विभूषित। सम्पादक—डा० गोपीनाथ कविराज— ....

७. तन्त्ररत्नम्—[पञ्चम भाग]-पार्थसारथि मिश्र विरचित, सम्पादक—श्री टि०वि० रामचन्द्र दीक्षित एवं श्री पं० पट्टाभिराम शास्त्री—

८. तन्त्रसंग्रहः—[भाग-३] सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी, योगतन्त्र-विभागाध्यक्ष—

९. वाक्यपदीयम्—[तृतीयकाण्ड, द्वितीय भाग] हेलाराज विरचित 'प्रकाश' एवं श्रीरघुनाथ शर्मा विरचित 'अम्बाकर्त्री' व्याख्या सहित। सम्पादक—श्रीरघुनाथ शर्मा

१०. महाभाष्यनिगूढाकूतयः—[शोधप्रबन्ध] लेखक एवं सम्पादक—डा० देवस्वरूप मिश्र—

११. पालितिपिटकसद्दानुक्कमणिका—सम्पादक—पालिविभागाध्यक्ष—

१२. रुद्रयामलम्—[तन्त्रशास्त्र] सम्पादक—योगतन्त्रविभागाध्यक्ष—